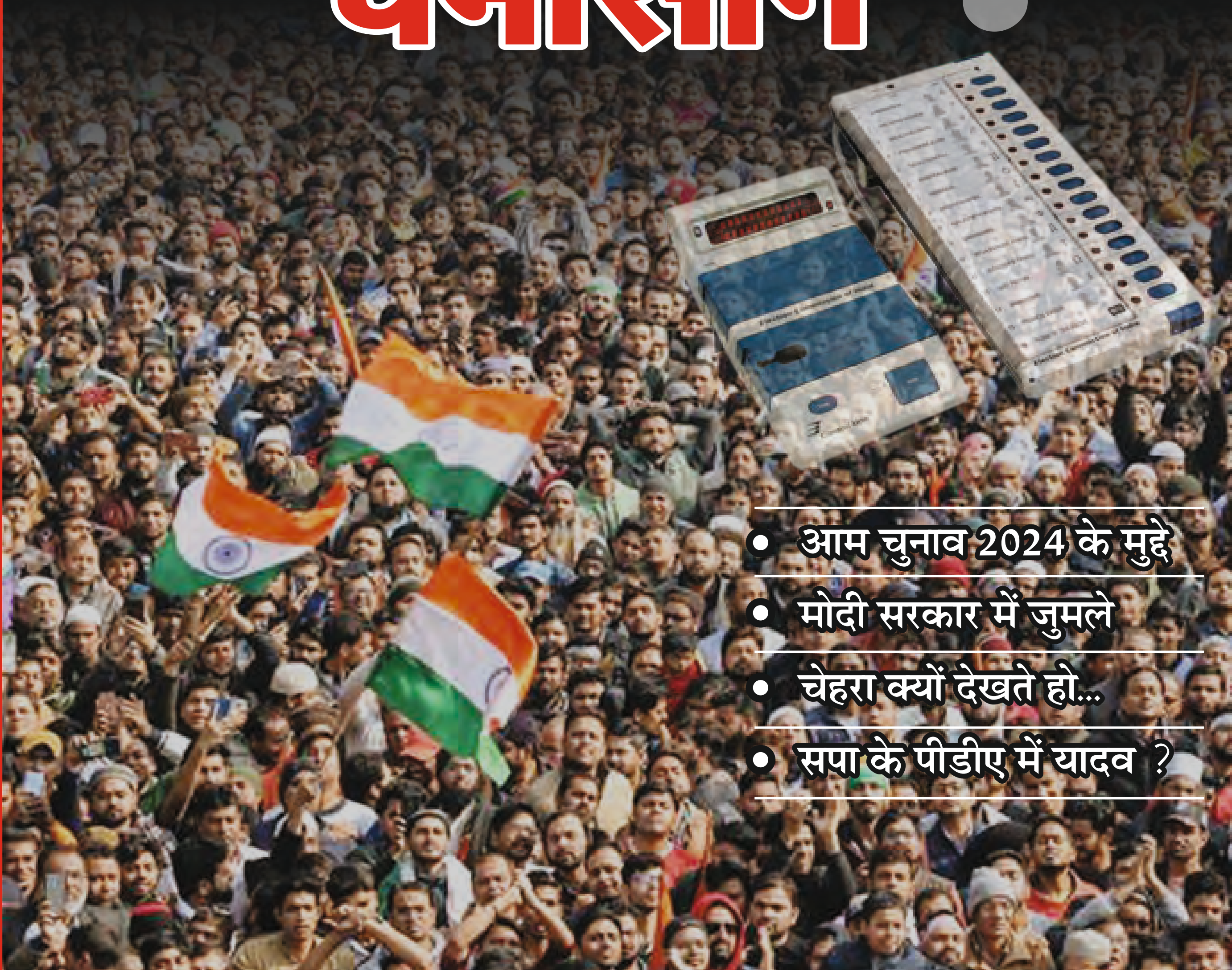
TITLE CODE : UPHIN49731

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

बसावन इंडिया

वर्ष : 3, अंक : 11 आजमगढ़ • मई 2024 • मूल्य : ₹30

सामाजिक न्याय का इम्तेहान! मुसलमान पर घमासान ?



- आम चुनाव 2024 के मुद्दे
- मोदी सरकार में जुमले
- चेहरा क्यों देखते हो...
- सपा के पीडीए में यादव ?

संपादकीय



"जागत रहा हो !"

इस चुनाव में BJP ने इस बात का जोर शोर से चिल्ला-चिल्लाकर कहा कि SC/ST/OBC का आरक्षण मुसलमान को दे दिया जाएगा। यहां यह जानना जरूरी है कि OBC में मुसलमान पहले से शामिल है, उसे तीन भागों में बांटने की वकालत BJP पिछले 10 सालों में कर रही है और रोहिणी कमीशन की जरिए बीच-बीच में बात आती रही। इस बारे में भागीदारी पर जानकारी रखने वाले मधुसुदन का कहना है कि सेना, पुलिस, लेखपाल, एसडीएम कहीं भी मुसलमान की भागीदारी नहीं दिख रही है। इसलिए उनकी भागीदारी को बढ़ाने के लिए समुचित प्रयास की जरूरत है।

कांग्रेस घोषणा पत्र में 50% कैप हटाने की बात की गई है। EWS आरक्षण मामले में 50% का कैप पहले ही हट चुका है। इंडिया की व्यवस्थापिका, न्यायपालिका में जो रूख सवर्णों के लिए अपनाया, जितनी नरम दिली और दरिया दिली सवर्णों के लिए दिखाया, उसका 10वां हिस्सा भी अगर OBC के बारे में दिखाए तो समाधान निकल आएगा। BJP ने तीन दिनों में 10% EWS आरक्षण सवर्णों को दे दिया जबकि उनकी आबादी 5-7% से ज्यादा नहीं है पूरे देश में। आरक्षण को गरीबी का आधार दिया जा सकता है तो मुसलमान और अन्य धार्मिक समुदायों को भी, आबादी के चौथे-पांचवें भाग की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। इसके लिए ईमानदारी से प्रयास की जरूरत है। यह ईमानदारी होती दिखनी भी चाहिए। जैसे कि सवर्णों के आरक्षण में दिखती है। SC/ST को उनकी आबादी के अनुपात में आरक्षण मिला लेकिन OBC जो 54 से 60 और किसी-किसी राज्य में 70% है, उसे 27% आरक्षण दिया गया, जबकि सवर्णों की आबादी 5 से 7% है पर उन्हें आरक्षण उनकी आबादी का लगभग 2 गुना मिल गया। इस तरह की सीनाजोरी कब तक और कैसे चलती रहेगी?

इसलिए OBC की गणना सहित सवर्ण जातियों की जनगणना आज की सबसे बड़ी जरुरत बन गई है। इंडिया गठबंधन ने इसके लिए प्रतिबद्धता दिखाई है, और घोषणा पत्रों में जाति गणना को सर्वोपरि भी रखा है, लेकिन सत्तारूढ़ NDA के दलों के घोषणा पत्र इस बारे में चुप हैं। इससे भी बढ़कर 10 वर्षों तक पिछड़े प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी बार-बार यह कह रहे हैं कि भारत में केवल 4 जातियां हैं- युवा, महिला, किसान और गरीब। अपने चुनावी भाषणों में जाति गणना पर वो चुप हैं, लेकिन जिनके ज्यादा बच्चे हैं, उन्हें OBC/ SC का आरक्षण दे दिया जाएगा, इसकी ललकार उनकी चुनावी रैलियों में सुनाई देती है। चुनाव प्रचार में मंगलसूत्र छीन लेने से लेने से लेकर आरक्षण तक छीन लेने की बात PM खूब कर रहें हैं, लेकिन विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर, न्यायालायों में जज, चुनाव कार्यालय में रिटर्निंग आफिसर कुछ जातियों से या अल्पसंख्यक समुदाय से अगर लगातार दूर किए जाते रहेंगे तो सबका साथ सबका विकास, एक साथ नही होगा और लोकतंत्र में सबका विश्वास भी कमजोर होगा।

यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि चुनावों में वादा/ दावों में सब, सबको साथ लेने की बात करते हैं,लेकिन इस चुनाव में NDA के लोग मुसलमान,ईसाईयों को ही नहीं, कुछ जातियों के लोगों को भी खुलेआम अलग करते दिख रहें हैं। NDA ही नही, इंडिया गठबंधन के दलों में भी यह खूब होता रहा है। कांग्रेस के समय में OBC को हमेशा दूर रखा गया। मुसलमानों के तुष्टिकरण की बात तो खूब हुई लेकिन वो सत्ता, संस्थान, शासन-प्रशासन, सेना, पुलिस में हिस्सेदारी से बहुत अलग रहे। कथित रूप से सामाजिक न्याय की आवाज बनकर आए दलों ने भी खूब अन्यायकारी काम किए। सपा के समय में SC का प्रमोशन में आरक्षण का घाव अभी भी दलितों को सालता रहता है, तो बसपा के शासन काल का नारा "बी.एस.पी.के राज में ब्राहमण खाए खीर, कोई जाति चोरी करे पकड़ा जाए अहीर" अभी भी लोगों के जेहन में है। सत्ता से बाहर रहने पर न्याय की गुहार नही बल्कि न्याय के सहारे सत्ता की चाह रखने वालों से सजग रहने की जरुरत है, वरना देश में पिछड़ों ने देख लिया कि 10 साल लगातार पिछड़ा प्रधानमंत्री रहते हुए पिछड़ों की गणना ही नही, आम जनगणना को ही भुला दिया। इसीलिए बसावन इंडिया के इस बार के अंक में घोषणा पत्रों को खंगालकर आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। चुनाव में भाग लीजिए, अपना वोट दीजिए और 4 जून के परिमाण आने के बाद भी जागत रहा हो ! जागत रहा हो ! चिल्लाते रहिए और संविधान, लोकतंत्र और अपने अधिकारों पर चोरी, डकैती और हमलों से बचते रहिए।

नरेन्द्र

TITLE CODE : UPHIN49731

आज़मगढ़ (उ.प्र.) ▪ अंक : मई

सन्-2024 ▪ वर्ष-3 अंक-11

बसावन इंडिया

संपादक
नरेन्द्र प्रताप
मो.: +91 94531 71770

सह-संपादक
डॉ. नरेश कुमार साहू
मो.: +91 99211 10844

प्रबंध संपादक
एड. देशराज (लखनऊ)
मो.: +91 9415767238

सह प्रबंध संपादक
अरविंद कुमार यादव

कंटेंट एडिटर
विक्रमजीत, सुधा सिंह,
कमलेश यादव, मैत्रेयी सिंह

ब्यूरो प्रमुख
दिल्ली एनसीआर-परिभाषा
छत्तीसगढ़-डॉ. जितेन्द्र सोनकर
मध्यप्रदेश-तेजबहादुर
महाराष्ट्र-आकाश खोब्रागड़े
मुजफ्फरनगर बिहार- जवाहर लाल राय
पूर्णिया बिहार- उमेश प्रसाद यादव
लखनऊ-विनीत कुमार
प्रयागराज-धैर्य मित्र सिंह
कुशीनगर-कोमल प्रसाद
पूर्वांचल-रमाकांत यादव
मिर्जापुर-एस.एम. सबा
बलिया-विनय कुमार
अमेठी - फूलचंद
देवरिया - आनंद कुमार
सरगुजा संभाग-कृष्णा पैकरा

डिजाइन एंड ले-आउट
इरफान खान-+91 93299 60007

संपादकीय कार्यालय
31 शहीद द्वार, आजमगढ़,
उत्तर प्रदेश पिन- 276 001
Email : basavanindia@gmail.com
www.facebook//बसावन इंडिया
+91 9453171770

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी नरेन्द्र प्रताप द्वारा मेट्रो प्रिंटर्स, डी 102, महानगर एक्सटेंशन, लखनऊ, (उ.प्र.) से मुद्रित व शहीद द्वार सिविल लाइन, आजमगढ़ (उ.प्र.), पिन-276 001 से प्रकाशित

इस अंक की झलकियां

www.basavanindia.com
बसावन इंडिया की ख़बरें हमारी वेबसाइट पर भी पढ़ी जा सकती हैं।









इस अंक में प्रकाशित सामग्री के आंशिक या पूर्ण रुप से पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। लेखक के विचार व्यक्तिगत हैं। प्रकशित सामग्री में दिए गए तथ्य संबंधी विवादों का पूर्ण दायित्व लेखक का है। संपादक, मुद्रक, प्रकाशक एवं सहयोगी संपादकीय टीम इसके लिए हरगिज उत्तरदायी नहीं होंगे। किसी भी प्रकार के विवाद के समाधान हेतु न्याय क्षेत्र आजमगढ़ होगा।

आम चुनाव 2024 के मुद्दे



देश भर की निगाहें आम चुनाव 2024 पर टिकी है। माना जा रहा है कि जो उत्तर पदेश में आयेगा उसकी दिल्ली में पहुंच आसान हो जाती है। दूसरे शब्दों में दिल्ली का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर गुजरता है।भाजपा ने पिछले दस सालों में उत्तर प्रदेश में किया क्या है? कहा जा रहा है कि डबल इंजन की सरकार है और तेज भाग रही है। बसावन इंडिया अपने इस अंक में भाजपा के पिछले सालों का लेखा जोखा और जिन मुद्दों को लेकर सरकार और सरकार के लोग जनता के बीच जा रहे हैं उसका विश्लेषण करेगी।

भाजपा का मुद्दा

काशी मथुरा और अयोध्या में सघन राष्ट्रवाद

अयोध्या में राम मंदिर निमार्ण और काशी में विश्वनाथ मंदिर के बाद भारतीय जनता पार्टी का अगला निशाना मथुरा है जहा से लोगों की धार्मिक आस्था का राजनैतिक लाभ लिया जा सके। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य दावा कर चुके हैं कि अयोध्या काशी झांकी है मथुरा अभी बाकी है। साफ शब्दों में अयोध्या और काशी के बाद अब मथुरा की बारी है।

महोत्सव पर महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव, इसके कुछ दिनों पूर्व चौरी चौरा महोत्सव और न जाने कितने महोत्सव मनाये जा रहे है। सत्ताधारी दल राष्ट्रवाद के नाम पर जनभावनाओं को भुनाना चाह रही है। सरकार ने खादी महोत्सव का भी आयोजन किया था जिसके द्वारा लोगों को यह बताना उद्देश्य था कि हम स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा दे रहे हैं।

पांच किलो फ्री राशन



प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ के चित्रों से सुसज्जित झोले/बोरियों में में पांच पांच किलो राशन दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री महोदय लगभग अपनी हर जनसभा में बहुत जोर शोर

के साथ इसका दावा करते हैं कि वह गरीबों को पांच किलो फ्री राशन दे रहे है। साथ ही साथ समाचार पत्रों में भी फ्री राशन दिए जाने के बड़े-बड़े विज्ञापन दिए जा हैं।

गौ रक्षा

गायों को हिंदुत्व का प्रतीक मानते हुए सरकार ने अपने वायदे के मुताबिक कई गौशालाओं की स्थापना की। गौ संरक्षण की दिशा में कई काम किए।

जनता के मुद्दे



विकास के मुद्दे

अख़बारों और समाचार चैनलों का मान लिया जाए तो चुनाव विकास के मुद्दे पर ही होना चाहिए, विकास के मुद्दे पर सरकार सिर्फ बाजीगरी कर रही है। विभिन्न प्रचार माध्यमो द्वारा बाते जा रहा है कि 'उत्तर प्रदेश सबसे अधिक एक्सप्रेस वे वाला राज्य है।' अब प्रश्न यह उठता है वर्तमान सरकार के कार्यकाल में कितने एक्सप्रेस वे का निर्माण हुआ? पिचले दस सालों में किन-किन योजनाओं और परियोजनाओं का शिलान्यास कर पूरा कर लिया गया।

महंगाई

महंगाई के मुद्दे पर सरकार और सरकार के लोग पूरी तरह से मौन है। पेट्रोलियम पदार्थ



और गैस के मूल्यों में हुई बेतहाशा वृद्धि से खाने पीने के सामान से लेकर हर वस्तु के मूल्य बढ़ गये हैं। माध्यम वर्ग और समाज का गरीब तबका महंगाई के बोझ तले दबा जा रहा है। महंगाई का दूसरा पहलू गरीबी है। स्थिति यह है की गरीबों की संख्या में लगातार वृद्धि होती जा रही है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सूचकांको में भारत की स्थिति बदतर हो गई है। देश का एक बड़ा तबका हुखा सोने को मजबूर है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2023 में भारत की रैंकिंग फिसल गई है। इस साल 125 देशों की रैंकिंग में भारत 111वें नंबर पर है। इस इंडेक्स में भारत के पडोसी देशों; पाकिस्तान (102वें), बांग्लादेश (81वें), नेपाल (69वें) और श्रीलंका (60वें) ने भारत से बेहतर स्थान हासिल किया।

चुनावी चंदा



आम चुनाव की शुरुआत से चुनावी चंदे के विस्फोट की खबर के बाहर आने के बाद सत्ताधारी पार्टी की भ्रष्टाचार के नारे की हवा निकल दी, हालाँकि मेन स्ट्रीम मीडिया ने इस खबर को पचाने की कोशिश करती रही लेकिन सोशल मीडिया में उठे बवंडर ने सरकार के दावों की हवा निकल दी। चुनावी चंदा सरकार के गले की फ़ांस बन गया है।

भ्रष्टाचार

अबकी बार सरकार भ्रष्टाचार के मुद्दे पर खुलकर नहीं बोल रही है। जनता कहने लगी है। पहले जो काम 100 रुपये देकर हो जाता था





मुख्यमंत्री उ.प्र. योगी आदित्य नाथ

चूँकि उत्तर प्रदेश में पिचले सात सालों से भाजपा सत्ता में है, इसलिए चुनाव के मद्देनजर उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बोल हम आपसे साझा कर रहे हैं, जिनके चेहरों पर उत्तर प्रदेश में चुनाव लड़ा जाएगा। उन्होंने पिछले दिनों क्या क्या बोला, जो चुनावों के लिहाज से महत्वपूर्ण हैं। किन-किन मुद्दों को लेकर वो एक बार फिर से जनता की अदालत में जा रहे हैं-

मुख्यमंत्री योगी के बोल

- **कॉवड़ या कर्फ्यू**
- **पहले की सरकारों में राम भक्तों पर चलती थी गोली, अब होती है पुष्पवर्षा**
- **मथुरा में तीर्थ स्थलों का विकास और अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण क्या सपा, बसपा और कांग्रेस करवाती?**
- **सपा सरकार में आतंकवादियों के मुकदमे वापस होते थे।**
- **गाँधी जी के नाम पर राज दूसरों ने किया उनके सपने सच हमने किए।**
- **धाम बनेगा बुलडोजर चलेगा।**
- **चाचा भतीजा धर्म और जाति देखकर नौकरियां देते थे।**

प्रधानमंत्री और उप्र के मुख्यमंत्री के बयानों से आम जनता की मूलभूत समस्याएं और विकास के मुद्दे गायब हैं। चुनाव का केंद्र विकास न होकर आक्रामक हिंदुत्ववादी विचार, उग्र राष्ट्रवाद और संप्रदाय विशेष के विरुद्ध कड़वे बोल हैं।

अब पांच सौ रुपये देकर भी नहीं हो रहा है।कई परीक्षाओं में पैसे लेकर पेपर लीक कर दिए गए। यहाँ तक की उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग भी इससे अछूता नहीं रह सका।

बेरोजगारी



रोजगार को लेकर सरकार द्वारा लम्बे लम्बे वायदे तो किये गये लेकिन वास्तविक धरातल पर सरकार रोजगार पर फिसड्डी साबित हुई। चुनाव में लाभ के लिए सरकार ने भर्तियों को लम्बे समय तक रोके रखा। जिसका परिणाम यह रहा की बेरोजगारों की संख्या में भारी वृद्धि हुई। रोजगार की मांग कर रहे छात्रों पर कई कई बार लाठियां चलवाई गई। शिक्षा मित्रों का मुद्दा, बीएड बेरोजगारों का मुद्दा लगभग समूचे सात सालों तक बना रहा। जबकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी सरकार में साढ़े चार लाख सरकारी नौकरी और 1 करोड़ 71 लाख युवकों को रोजगार दिए जाने का दावा किया है।

पेपर लीक



उत्तर प्रदेश जहाँ पिछले सात सालों से भाजपा की सरकार है। परीक्षाओं में हुए पेपर लीक की घटनाओं ने सरकार के रोजगार दिए जाने के दावों की हवा निकल दी है। पिछले कई वर्षों से रोजगार की आस में दिल्ली,प्रयागराज,लखनौ जैसे शहरों में रह रहे युवाओं का मनोबल कमजोर हुआ है जिसके कारण प्रयागराज जैसी डेलीगेसी में प्रतियोगी छात्रों में आत्महत्या करने की टेंडेंसी बढ़ गई है। उत्तर प्रदेश में एक के बाद एक करके कई पेपर लगातार लीक हुए हैं।

भर्तियों में आरक्षण को लेकर हकमारी-



अरविन्द कुमार सरोज
अधिवक्ता हाई कोर्ट इलाहाबाद

> “मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ गलत तथ्यों के आधार पर एक बार फिर से जनता को बरगलाने की कोशिश की जा रही है 86 में 56 यादव एसडीएम की भ्रामक खबर 2013 में एक पत्रिका समूह द्वरा गलत तथ्यों के आधार पर एजेंडा सेटिंग के लिए की गयी थी। यदि ऐसा नहीं था तो पिछले सात सालों से योगी जी सत्ता में हैं उन्होंने ने वर्ष 2015 में सपा सरकार में भर्ती किए गए उन 56 एसडीएम के नामों की लिस्ट हो सार्वजानिक क्यों नहीं किया और 2014-15 में 60 लाख लेकर किए गए और सात सालों में केवल रेट पता कर पाए 60 लाख। सूची तक नहीं दे पाए तो उन 86 एसडीएम को दण्डित क्यों नहीं किया? तो क्या यह मान लिया जाय कि योगी जी उन 86 एसडीएम से साठ गांठ कर लिया है।”

उत्तर प्रदेश सरकार ने अब जाकर बड़ी मशक्कत के बाद यह स्वीकार लिया है कि 69000 प्राइमरी शिक्षक भर्ती में आरक्षण घोटाला हुआ था। भर्ती में ओबीसी की लगभग 23% और एससी की 5% सीटें धोखाधड़ी द्वारा सामान्य अभ्यर्थियों को दे दी गईं थी। अब जब इसका हल सुझाया जा रहा है तो 69 हजार से पूर्व विज्ञापन 68500 की बची सीटों में से 6000 सीटें आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों ऐसे दी जा रही है जैसे कि उनपर एहसान किया गया, वो भी नए विज्ञापन के जरिए।

किसानों की समस्याएं

एक साल से दिल्ली में नये कृषि कानूनों के विरोध में आन्दोलन कर रहे किसानों की मांगे मान लिए जाने से भले ही किसान आंदोलन समाप्त हो गया हो लेकिन किसानों की क्षेत्रीय समस्याएं अभी बरक़रार हैं, गन्ना किसानों का करोड़ो रुपये चीनी मिलों पर अभी बकाया है। जब की सरकार 15 दिनों के भीतर सम्पूर्ण गन्ना मूल्य का भुकतान करके सत्ता में आई थी। इसके आलावा किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य नहीं मिल पा रहा है, किसानों के हिस्से का एक बड़ा भाग बिचौलिए खा जा रहे है। किसान औने पौने दाम पर अपनी उपज बेचने को मजबूर हैं।

मुख्य विपक्षी पार्टियों का मुद्दा



विभिन्न भाजपा नेता, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और यहाँ तक की स्वंय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सपा और सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर जिस तरह से हमलावर है, उसको देख कर लगता है कि भाजपा यह मान रही है की सपा से उसकी सीधी टक्कर है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव की जिम्मेदारियां बढ़ गई है। सपा प्रमुख भाजपा के वाक युद्ध में रक्षात्मक रुख से आगे बढ़कर आक्रामक रुख अख्तियार करना पड़ेगा नहीं तो भाजपा जैसी राष्ट्रीय दल के सामने टिक पाना संभव नहीं होगा।

समाजवादी पार्टी के मुद्दे



विकास का मुद्दा

पांच साल पहले किये गए विकास कार्यो के बारे में बताया जा रहा है। विकास के लिए भावी रणनीति के बारे में खुलकर कभी नहीं बोले।

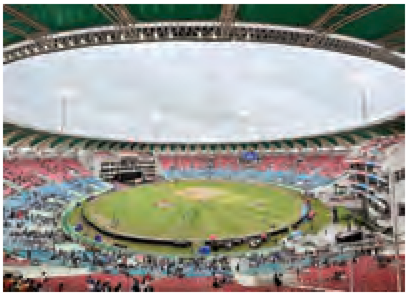
रोजगार

रोजगार के मुद्दे पर बोलते तो अवश्य हैं लेकिन रोजगार के मुद्दे पर रक्षात्मक रुख किय हुए है, यह बताना काफी नहीं है कि भाजपा शासन में लोग बेरोजगार है। बेरोजगारी से निपटने के लिए सपा की क्या रणनीति है उसके बारे में खुलकर कर सामने आना चाहिए।

महंगाई

महंगाई के मुद्दे पर सपा ने कई विरोध प्रदर्शन तो किये लेकिन यह पर्याप्त नहीं है जनता महंगाई से कराह रही है।

अखिलेश यादव ने पांच साल पहले मुख्यमंत्री के तौर पर विकास किया था, यह सर्व विदित है की अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री



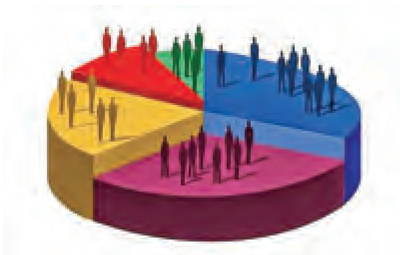
रहते हुए मेट्रो, एक्सप्रेस वे, स्टेडियम जैसे कई विकास के काम किये थे लेकिन उसको भुना नहीं पाए आखिर उनसे कहाँ चूक हो गयी कि जनता ने उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया। वस्तु स्थिति यह है कि समाजवादी पार्टी में मुद्दों की पकड़ नहीं है। थोड़ा दबाव पड़ा है तो आज की तारीख में जाति जनगणना की बाते की जाने लगी है, जिस तरह से आक्रामक हिन्दुत्व का मुद्दा उठाया जा रहा है उसके जबाव में बहुत दबी जुबान से कभी सामाजिक मुद्दों और मुसलमानों के मुद्दे उठा लिए जाते हैं, वो काफी नहीं है।

सोशल मीडिया पर लोगों की बढ़ती प्रतिक्रिया देख कर ऐसा मालूम होता है की इस आक्रामक हिन्दुत्व से जनता लड़ रही है। अब चुनाव में सिर्फ राजनीतिक दलों का चुनाव आपस में नहीं लड़ रहे हैं बल्कि जनता सीधे भाग ले रही है। जनता चुनाव लड़ रही है। जिसका सीधा फायदा प्रमुख विपक्षी दल को मिलेगा।

विपक्ष के मुद्दे होने चाहिए

मंडल-कमंडल की लड़ाई 90 के दशक में तो खूब चली लेकिन मंडल के आगे कमंडल थम सा गया। समतावादी दल, दल-दल में धसते गए और दल पारिवारिक दल में बदलते चले गए। जबकि कमंडल की बातें बाकी दल भी करने लगे। सवर्णों के आरक्षण से लेकर सवर्ण आयोग बनाना, राम मंदिर की जगह कोई और मंदिर बनाने की रह पर चलकर मंडलवादी दल कमंडल की पिच पर खेलते खेलते या तो जेल की सलाखों के पीछे होते गये या फिर हाशिये पर चले गये या घरों में कैद होते गए। इतना ही नहीं 20वीं सदी के 20 सालों में मंडलवादी/समतावादी विचारों को आगे ले जाने का दावा करने वाले दलों ने कई वैचारिक रूप से हिंसक कार्य किये जिससे उनके विचारों के दिवालियापन का पता चलता है। एससी के प्रमोशन में रिजर्वेशन को खत्म करना या लोकसभा में इस पर बिल फाड़ने का समाजवादियों का काम हो या फिर बहुजन से सर्वजन की यात्रा करने वाले कांशीराम की कमाई को गवाने वाली बसपा हो। आक्रामक राष्ट्रवाद की काट एक ही हो सकती है, आक्रामक समतावादी आन्दोलन जो पेरियार और अम्बेडकर के दर्शन पर आधारित है। ऐसे में विपक्ष के चुनावी एजेंडे में शामिल होना चाहिए-

जाति जनगणना



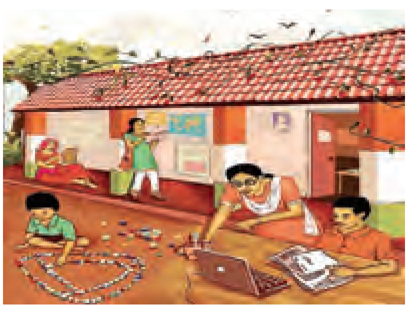
जाति जनगणना का मुद्दा पिछले कई सालों से पेंडिंग में पड़ा हुआ है, विपक्ष को खुलकर जाति जनगणना के मुद्दे पर आगे बढ़ाना चाहिए ताकि सत्ता में आयेंगे तो जाति जनगणना करवाएंगे।

नौकरियों में लोगों की गणना

नौकरियों में लोगों की गणना कराने का मुद्दा होना चाहिए, यह गणना होनी चाहिए थी कि दलितों पिछड़ों की नौकरियों में भागीदारी हो पाई या नही?

शिक्षा नीति

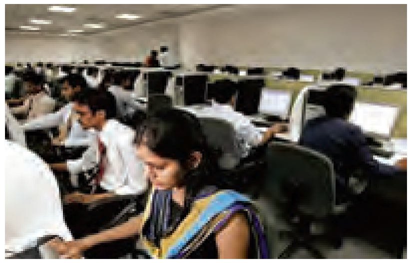
नई शिक्षा नीति के नाम पर पिछले दो सालों में एन सी ई आर टी के महत्वपूर्ण स्लेबस को गायब कर दिया गया है। कई महत्वपूर्ण चैप्टर को निकल दिया गया, एक जिम्मेदार नागरिक होने के लिए जिसको पढ़ना हर एक छात्र के लिए जरुरी था।



मंदिरों की खाली पड़ी भूमि का सदुपयोग

तमिलनाडु जैसे राज्यों में मंदिरों की खाली पड़ी भूमि पर स्कूल, अस्पताल और पुस्तकालय बनाने की बात हो रही है। ऐसे संसाधनों के सदुपयोग का मुद्दा होना चाहिए।

मंदिरों के स्थान पर स्कूल कालेज और संस्थान



बड़े बड़े मंदिरों जिनमे करोंड़ों - अरबों रुपये लगाए जा रहे हैं, के स्थान पर छोटे छोटे स्कूल अस्पताल, कालेज और छोटे छोटे संस्थान बनाये जाने का मुद्दा होना चाहिए।

निजी क्षेत्र में आरक्षण



सरकारी विभागों में एजेंसियों के सहारे नियुक्तियां हो रही हैं। नियुक्तियों में आरक्षण का प्रावधान नहीं है, तो इसके लिए अमेरिका जैसा डाइवर्सिटी मिशन हर जगह होनी चाहिए। कम्पूटर आपरेटर, डाटा इंट्री आपरेटर, नर्स, एम्बुलेंस ड्राइवर लगभग हर जगह आरक्षित वर्ग की भागीदारी होनी चाहिए।

लैटरल एंट्री

लैटरल एंट्री का खुलकर विरोध होना चाहिए, जो संविधान का खुले आम अतिक्रमण है। संविधान में लोक सेवकों के लिए लोक सेवा आयोग की व्यवस्था दी गयी है। अब लैटरल एंट्री के माध्यम से बिना परीक्षा के, आरक्षण नियमों को ताख पर रख कर अपने चहेतों की भर्तियाँ की जा रही कई । इसे मुद्दा बनाया जाना चाहिए। ▪

सवर्णों की ज्यादा भर्ती और पिछड़ दलितों की नौकरियों में हकमारी



प्रदेश में विभिन्न संस्थानों में पिछड़ों और दलितों के लिए नौकरियों में उनका हक़ नहीं दिया जा रहा है, किसी न किसी बहाने उन्हें नौकरियों से दूर रखा जा रहा है। आयोग द्वारा विज्ञापित पदों में उनके लिए आरक्षित पद इस लिए रखे जा रहे है की भर्ती का मामला कोर्ट में न उलझे।

पुरानी पेंशन बहाली



विगत वर्ष 2023 अक्टूबर माह में एम.एन.ओ.पी.एस के अगुवाई में पूरे देश के कर्मचारी दिल्ली के रामलीला मैदान में पुरानी पेंशन बाहरी के लिए लामबंद हुए जो कि कर्मचारियों के इतिहास में सबसे बड़ी रैली थी मीडिया रिपोर्ट् के अनुसार रैली में लगभग 20 लाख कर्मचारियों ने प्रतिभा किया|

सांडों का आतंक



खुले आवारा सांड जनता के लिए मुसीबत बन गए है। सैकड़ों की झुण्ड में खड़ी फसल को पल भर में चट कर जाते हैं। जिसका परिणाम है कि आज इंसानों और जानवरों के बीच संघर्ष बढ़ गया है। सड़कों पर सांडों की वजह से होने वाली दुर्घटनाओं में लोग बड़ी संख्या में जख्मी हो रहे है और मर रहे हैं।



प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

10 सालों में किए कामों के बजाय मुसलमान के इर्द-गिर्द बात की जा रही है। सामाजिक न्याय की सीधी बातें न करके जाति को केवल चार जाति बताने वाले (गरीब,महिला,युवा और किसान) सामाजिक न्याय और जाति अन्य पर तो चुप है। पर दलितों-पिछड़ों का आरक्षण मुसलमान को दे देने की बात चिल्ला चिल्ला कर कर रहे हैं। पेश हैं चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री मोदी के कुछ खास खास बोल

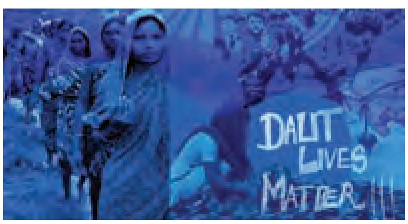
- **मंगल सूत्र**
- **मुसलमान घुसपैठिया**
- **पाकिस्तान**
- **पिछड़ों के आरक्षण में कटौती**
- **आडानी का टेम्पो**
- **सहजादे के अंकल सैम**

रोजगार के लिए पलायन

कल कारखाने और स्थानीय स्तर पर रोजगार न होने के कारण मुंबई, दिल्ली, सूरत, लुधियाना, पंजाब की ओर बड़ी संख्या में पलायन हो रहा है। बनारस, गोरखपुर, आज़मगढ़ से चलने वाली ट्रेने ठूंस ठूंस कर भरी होती हैं।

कानून व्यवस्था

ऐसी कानून व्यवस्था जिसमें दलितों और पिछड़ों विशेषकर महिलाओं संबंधी अपराधों का मुद्दा । उत्तर प्रदेश के ज्यादातर थानों के थानेदार सवर्ण जातियों से हैं। थाना



एक महत्वपूर्ण इकाई होती है जहाँ लोगों की शिकायतें दर्ज होंगी अथवा उन्हें डंडे मर कर खदेड़ दिया जाएगा। यदि उनकी रिपोर्ट दर्ज भी हुई तो आगे का न्याय कैसा होगा यह थाने में दर्ज रिपोर्ट पर निर्भर करेगा।

- **पुलिस अभिरक्षा में हो रही हत्या और मौतों को मुद्दा बनाया जाना चाहिए।**

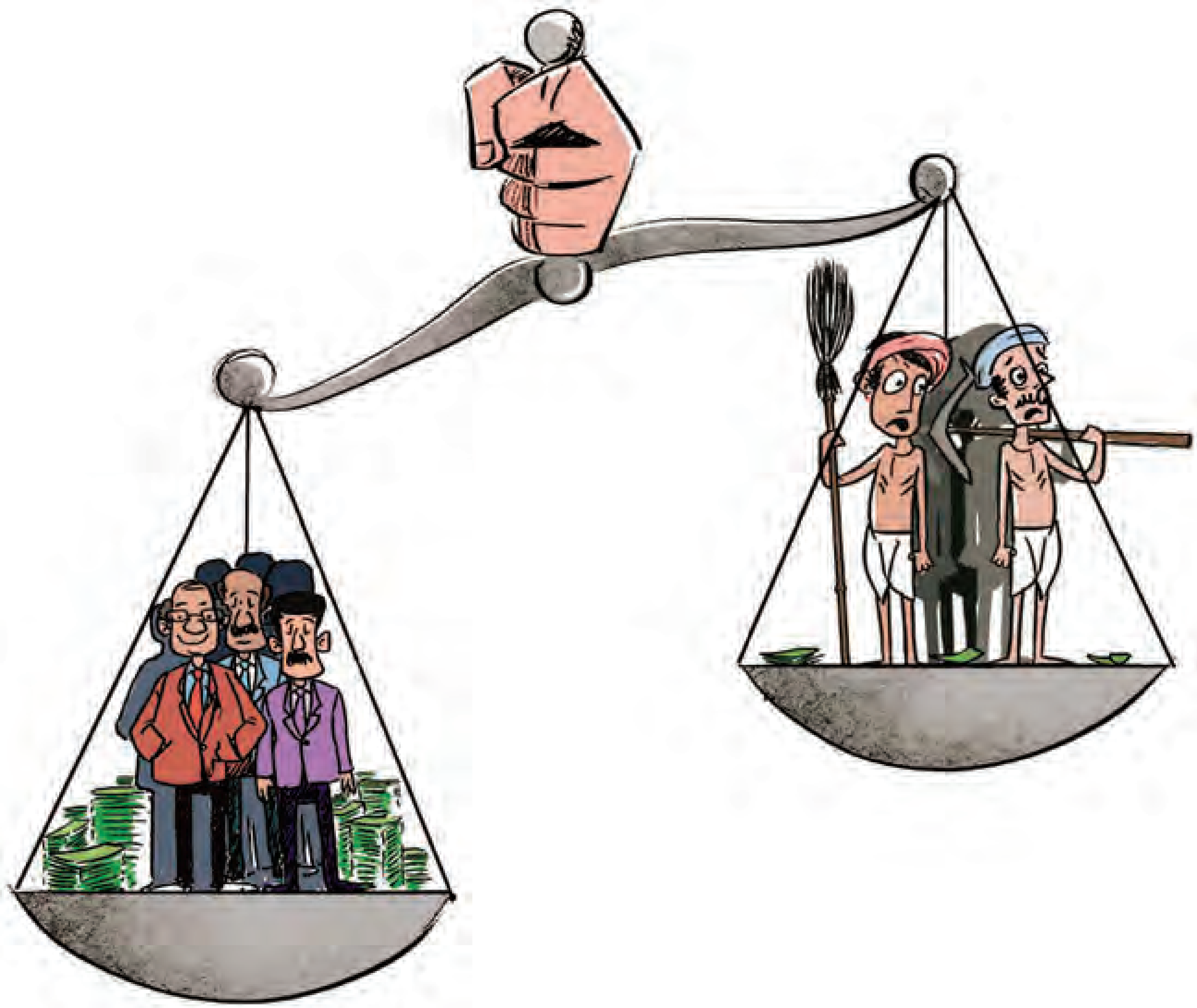
पोस्टिंग का मुद्दा

देश और प्रदेश के रसूखदार पदों पर जाति विशेष (सवर्णों) की तैनाती की जा रह है, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की नियुक्ति का आधार उनकी जाति ही है। हाल ही में कांग्रेस नेता राहुल गाढ़ी जी ने प्रधानमंत्री कार्यालय में तैनात 03 ओबीसी अधिकारीयों की तैनाती का मुद्दा प्रमुखता से उठाया था। जबकि आज देश के प्रधान मंत्री ओबीसी हैं। ▪



अरविन्द कुमार यादव
मो.न. +91 8840549291

आम चुनाव में सामाजिक न्याय



2024 का चुनाव सामाजिक न्याय की दृष्टि से वाटरलू साबित होने वाला है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में सामाजिक न्याय को भारतीय संविधान का सबसे पहला उद्देश्य बताया गया है। आजादी के बाद से इस दिशा में बहुत सारे कदम उठाए गए, कुछ आधे मन से तो कुछ खाना पूर्ति के लिए लेकिन 2024 के चुनाव में सामाजिक न्याय पर तकरार खूब हो रही है। बसावन इंडिया विश्लेषण के साथ खास रिपोर्ट आपके सम्मुख प्रस्तुत है

75 सालों में जो हुआ

- **एससी एसटी का ससद और विधानसभा में आरक्षण**
- **एससी और एसटी के लिए नौकरियो में क्रमशः 15 और 7:30 प्रतिशत आरक्षण**
- **एससी एसटी एक्ट (उत्पीड़न से रोकथाम)**
- **एससी- एसटी छात्रवृत्ति**
- **एससी-एसटी के आर्थिक विकास के लिए वित्त विकास निगम**

इसके अलावा केंद्र और राज्य सरकारों के बनाए जो ज्यादातर दिखावे के दांत साबित हुए योजना भ्रष्टाचार और फर्जी लाभार्थी की आंकड़ेबाजी तक सीमित रहे।

इसका गहराई से परिक्षण करने पर सच्चाई कुछ और ही सामने आती है।

एक नजर-

एससी एसटी के लोग इंडिया और राज्य सरकारों की नौकरियों में आए लेकिन 75 वर्षों बाद भी 15% और 7.30% आरक्षण का आंकड़ा किसी भी विभाग में नहीं है। उच्च स्तरीय पदों पर जैसे प्रोफेसर कुलपति, सचिव



दलित उत्पीड़न

पुलिस और सेना में उनकी उपस्थिति नगण्य है। मीडिया के बारे में तो कुछ कहना ही नहीं है।

उद्योग में भी एससी एसटी की भागीदारी बहुत कम है। सस्ता ऋण जैसे सरकारी प्रयास, एससी-एसटी के आर्थिक विकास के लिए वित्त विकास निगम बने जो बंदरबाँट का अखाड़ा बने और देश के 100 उद्योगपतियों में एक भी एससी एसटी का नहीं है।

किसी अखबार टीवी और चैनल के संपादक, सीईओ कोई एससी/एसटी नहीं बने, संविधान में अवसर की समानता और एफर्मेटिव एक्शन केवल और केवल नौकरियों में आरक्षण तक सीमित रहा अभी तक इसकी कोई समीक्षा नहीं हुई कि आरक्षण ठीक से क्यों लागू नहीं हो सका बल्कि इसके विरोध में तमाम संस्थाओं मीडिया की राय सामने आती रही है

संस्थानों में एससी/एसटी छात्रों के लिए उत्पीडन का केंद्र बनते गए। एससी कमिशन एसटी कमिशन इसकी रक्षा करने में विफल रहे क्योंकि क्लास रूम और टीचर्स रूम में इतना सामाजिक विद्वेष रहा कि कई बार एसटी / एससी / ओबीसी बच्चों को आत्महत्या तक करनी पड़ी लेकिन इस बारे में सरकारों द्वारा कोई ठोस पहल नहीं हुई|

एससी के पास जमीनी नहीं थी। पढ़ने और लड़ने और उसके आगे बढ़ाने की अवसर कत्तई बंद थे। संविधान लागू होते ही लोकसभा विधानसभा में सीट सुरक्षित रही। इसका बहुत लाभ नहीं मिला। लेकिन नौकरियों में देशभर में 15% और राज्य में जनसंख्या के अनुसार आरक्षण मिला। इसका फायदा मिला। कार्यालय में उनकी उपस्थिति से भारतीय बहुसंख्यक समाज यानी TOUCHABLE लोगो को आसहज होना पड़ा। कभी-कभी बड़े पदो जैसे एसपी, कलेक्टर, दरोगा पर आने से समाज की चक्की में कसकर मिलवट और पिसावट हुई।

लेखपाल, प्राइमरी टीचर, पुलिस आदि में उनके आने से गांव-गांव खेत-खलियानों तक समाज में पिसावट-मिलावट भले ही शुरू हुई पर इन वर्ग के कर्मचारियों के गिलास- बर्तन अलग होते और उनकी पेंदी में चिन्ह लगाना पड़ता रहा। इन कर्मचारियों को गांव (जो पुराने सामाजिक ढांचे कड़े अडियल अड्डे थे) में कुर्सी चारपाई भी देनी पड़ी।

सरकारी नौकरियां विशेष का रेलवे की नौकरियों में दलितों को देश के एक कोने से दूसरे कोने तक आने जाने का अवसर प्रदान किया। इससे जहां दलित को खुली हवा में सांस लेने का मौका मिला वहीं उनकी उल्लास उत्साह की संभावना कुलाचे मारने लगी।

नौकरियों में आए लोगों का जब सम्मान प्राप्त हुआ देश दुनिया देखने के बाद उनके अंदर का मान-मर्दन जाग और दलितो के बीच से बड़े-बड़े लेखक पैदा हुए। दयाराम पवार, ओमप्रकाश वाल्मीकि, कवल भारती, रजनी तिलक, आनंद तेलतुम्बडे जैसे लेखक आए जिन्होंने दलित ही नहीं बल्कि भारत को जानदार साहित्य दिया जिससे सामाजिक न्याय और समाज की बनावट, बसावट और जिंदा दिली को नया आयाम मिला।

डॉ.आंबेडकर के जाने के बाद बाबू जगजीवन राम जैसे नेता सामने आए। इसके बाद ज्यादातर नेता दलित नेता तो बने पर दलितों की नुमाइंदगी नहीं कर सके। इस नुमाएंगी की जिम्मेदारी भी दलित लेखकों ने बखूबी निभाई।

आजादी के 20-25 साल जाते-जाते दलितों के बीच से 10-15 लाख लोग ऐसे आ गए जो इज्जत की जिंदगी जीने-खाने लायक हो गए। डॉक्टर अंबेडकर के सपनों के लायक भी रहे हो या नहीं यह आने वाला समय में शोध का विषय होगा लेकिन जिस जलालत जहालत से वह निकले थे, उसे बदलने के लिए इनका खून निरंतर चल रहा था। हर आफिस विभाग रेलवे स्टेशन में/पर अंबेडकर भवन बना कर विचारों का आदान प्रदान जैसी संभावना पैदा कर अपने लिए स्थान बनाये। ये सार्वजानिक स्थल सामाजिक विचारों के आदान प्रदान के नए केंद्र के रूप में उभरे।

विधायिका में आरक्षण से दलितो के बीच प्रतिनिधि तो आए पर वे संसद और विधानसभाओं में दलितों की मुखर आवाज ना बन सके।

ओबीसी के लिए

ओबीसी के पास जमीन थी लेकिन वह ज्यादातर सीमांत और लघु किसान थे और कहीं-कहीं हुए जमींदार और राजवाड़े भी थे।

आजादी के बाद औद्योगिकरण और व्यापार का फायदा भी मिला पढ़ाई के अवसर खुले और रामस्वरूप वर्मा, ललई राम यादव, राजेन्द्र यादव, कांचा इलैयाइलैया, सेफर्ड जैसे लेखकों ने सामाजिक न्याय को नई धार दिया।

लोकतंत्र में दलित और दैनिक जातियों को सांसद विधायक ही नहीं मंत्री मुख्यमंत्री



देश में बार बार होने वाले चुनावों ने सामाजिक न्याय का रास्ता खोला

भले ही लोग सवर्ण वश या दिखावे के लिए एक दूसरे के नजदीक आये, लेकिन लोग नजदीक आये। चुनावों के दौरान दलित बस्तियों में भोज का आयोजन किया जाने लगा। एक दूसरे से नजदीकियां बढ़ी, भले ही वो स्थायी नहीं रही। बार बार चुनाव होने से जनप्रतिनिधियों का दलित बस्तियों में का आवागमन भी बढ़ा। इस तरह से लगातार एक दूसरे से मिलने से, समाज के दबे कुचले निम्न तबके का मनोबल बढ़ा, इसीलिए मान्यवर कांशीराम बार बार चुनाव कराये जाने की वकालत करते थे। चुनाव की ही है कि फिल्म अभिनेत्री हेमा मालिनी खेतों में काटते हुए अपना फोटो सोशल मीडिया में डालने के लिए बाध्य हो जाती हैं। लक्जरी कारों में घूमने वाले नेता गण देश की दलित बस्तियों में कैम्प किये हैं। अभी कुछ दिनों पूर्व उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर भी किसानों के बीच गेहूं काटते नजर आए।



हेमा मालिनी की गेहूं कटते हुए



ओम प्रकाश राजभर गेहूं कटते हुए

कैबिनेट मंत्री से लेकर भारत के प्रधानमंत्री पद तक का दस्तक देने की कोशिश की। कई राज्यों के मुख्यमंत्री पिछड़े बने और कांग्रेस के 30 40 साल के शासन में मुख्यमंत्री ज्यादातर सवर्ण जातियों और विशेष कर ब्राह्मण तक सीमित रहा। लेकिन लोकतंत्र की चक्की में धीरे-धीरे ऐसी जमीन तैयार की की हर राज्य में छोटी छोटी पार्टियों के मुखिया के रूप में सामने आये जो राज्यों के मुख्यमंत्री के साथ साथ पार्टी के प्रमुख भी रहे।

कई राज्यों में ओबीसी को आरक्षण लागू हुआ। सवर्णो ने तीव्र विरोध किया। तीव्र विरोध के बावजूद यह लागू हुआ। लेकिन व्यवहार में बहुत सफल नहीं रहा और ओबीसी लोगों को भारत सरकार की नौकरियों में भागीदारी थर्ड-फोर्थ क्लास में 20% से अधिक नहीं हुई, और प्रथम श्रेणी में तो दहाई अंक भी नहीं छु पाई। सर्वोच्च पदों पर जिसमे कुलपति, प्रोफेसर बड़े शिक्षण संस्थानों के निदेशक.. सचिव, डीजीपी और सेना के ब्रिगेडियर के ऊपर के पदों पर पहुंच दूर की कौड़ी बना हुआ है।

भारतीय जनता पार्टी जो सवर्णों के विशेष कर ब्राह्मण और बनिया की हितों को साधने वाली पार्टी थी, उसने बड़ी संख्या में पिछड़े और दलित नेताओं को मैदान में आगे करने को मजबूर हुई। उमा भारती, कल्याण सिंह, विनय कटियार, शिवराज सिंह चौहान, गोपीनाथ मुंडे जैसे लोगों के सहारे भाजपा मंदिर- मुसलमान को सहारा बनकर पिछड़ों में पैठ बनाई। इसकी चरम परिणति तब हुई जब नरेंद्र मोदी खुद को पिछड़ा घोषित करके पिछड़ा-पिछड़ा करते देश के प्रधानमंत्री तक बन गए।

फिजाओं-हवाओं में पिछड़ों की आवाज को मंडल कमीशन की रिपोर्ट लगातार हवा दे रही थी। 40 साल बाद इसके कुछ अंश को लागू करने पर मजबूर होना पड़ा। लेकिन पिछड़ों की आवाज को सही दिशा और धार ना मिलने से जमीन पर पिछड़ों की उड़ान मोमी पंख की तरह पिघलती चली गई. मीडिया, सिनेमा, संस्कृति के क्षेत्र में दखल न बन पाने से पिछड़े संख्या में बहुत भारी होने पर भी अपनी आवाज बुलंद नहीं कर सके। एक समय तो ऐसा भी आया था कि कोई भी दल या संगठन आरक्षण की ओर देखने बोलने की हिम्मत भी नहीं कर सकता था, लेकिन पिछडे लोग और दलित आरक्षण की नुमाइंदगी और मजबूती से तर्क रखने में निरंतर फेल होते गए। यहां तक की रामविलास पासवान, मायावती और पिछड़ों के दल सवर्णों के लिए भी आरक्षण की मांग करने लगे। हद तो तब हो गई जब मर्ज की दवा आरक्षण माना जाने लगा और आरक्षण की धार खत्म होते-होते यहां तक पहुंची कि पिछड़ों ने ही सवर्णो के आरक्षण की मांग की।

सवर्ण आयोग का गठन से लेकर स्वर्ण के हितों की बात करने लगे। कुछ दलित नेता दलितों में भी क्रीमी लेयर बनाने की खूब वकालत करने लगे जबकि इस बात पर चर्चा या खुलासा करने की मांग कभी नहीं देखी गई कि एससी की 15% या एसटी के 7:30% आरक्षण आजदी के 70 वर्ष बाद भी क्यों नहीं भरे गए? ▪

ये सब तो हुआ, सो हुआ आने वाले चुनाव में सामाजिक न्याय पर चर्चा नहीं हो रही है, लेकिन जनता के बीच सामाजिक न्याय को लेकर गहरा मंथन चल रहा है। इसी क्रम में बसावन इंडिया ने बड़ी पार्टियों के घोषणा पत्रों को खंगालने की कोशिश की है कि बड़ी राजनीतिक पार्टियों क्या वादा/दावा कर रही हैं?

कांग्रेस : सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता

हिस्सेदारी न्याय

सामाजिक न्याय

कांग्रेस पार्टी पिछले सात दशकों से समाज के पिछड़े, वंचित, पीड़ित और शोषित वर्गों एवं जातियों के हक और अधिकार के लिए सबसे अधिक मुखरता के साथ आवाज़ उठाती रही है। कांग्रेस लगातार उनकी प्रगति के लिए प्रयास करती रही है। लेकिन जाति के आधार पर होने वाला भेदभाव आज भी हमारे समाज की हकीकत है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़ा वर्ग देश की आबादी के लगभग 70% हैं, लेकिन अच्छी नौकरियों, अच्छे व्यवसायों और ऊँचे पदों पर उनकी भागीदारी काफी कम है। किसी भी आधुनिक समाज में जन्म के आधार पर इस तरह की असमानता, भेदभाव और अवसर की कमी बर्दाश्त नहीं होनी चाहिए। कांग्रेस पार्टी ऐतिहासिक असमानताओं की इस खाई को निम्न कार्यक्रमों के माध्यम से पाटेगी।



साभार कांग्रेस घोषणा पत्र

▪ नरेन्द्र प्रताप

कांग्रेस ने आरक्षण को लेकर एक अहम प्रतिबद्धता के बारे में कहा है कि वह अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं गरीब सामान्य वर्ग को मिलने वाले आरक्षण पर 50 प्रतिशत का कैप हटाएगी। साथ ही, वह हर जिले में आंबेडकर भवन-सह-पुस्तकालय भी खोलेगी। उसका यह वादा उत्तर प्रदेश में अर्जक संघ के संस्थापक रामस्वरूप वर्मा की याद दिलाती है।

लोकसभा चुनाव-2024 के लिए कांग्रेस ने घोषणापत्र जारी कर दिया है। कुल 48 पन्ने के घोषणापत्र को कांग्रेस ने 'न्याय पत्र 2024' की संज्ञा दी है। खास बात यह कि इस घोषणापत्र में हाल ही में पार्टी में अधिक स्वीकार हुए सामाजिक न्याय के महत्व और संभवतः इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बढ़ते प्रभाव को सहज ही देखा जा सकता है। मसलन, घोषणापत्र के प्रारंभ में ही कहा गया है कि "कांग्रेस पार्टी पिछले सात दशकों से समाज के पिछड़े, वंचित, पीड़ित और शोषित वर्गों एवं जातियों के हक और अधिकार के लिए सबसे अधिक मुखरता के साथ अवाज उठती रही है। कांग्रेस लगातार उनकी प्रगति के लिए प्रयास करती रही है। लेकिन जाति के आधार पर होने वाला भेदभाव आज भी हमारे समाज की हकीकत है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़ा वर्ग इस देश की आबादी के लगभग 70 प्रतिशत हैं; लेकिन अच्छी नौकरियों, अच्छे व्यवसायों और ऊंचे पदों पर उनकी भागीदारी काफी कम है। किसी भी आधुनिक समाज में जन्म के आधार पर असमानता, भेदभाव, और अवसर की कमी बर्दाश्त नहीं होनी चाहिए।"

सामाजिक न्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाते हुए कांग्रेस ने सामाजिक न्याय को प्राथमिकता दी है। उसने कुल 23 कार्यक्रमों की सूची प्रस्तुत की है। इसमें सबसे पहले यह कि कांग्रेस राष्ट्रव्यापी आर्थिक-सामाजिक जातिगत जनगणना करवाएगी। इसके माध्यम से कांग्रेस जातियों, उपजातियों, और उनकी आर्थिक, सामाजिक स्थिति का पता लगाएगी। जनगणना से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर कांग्रेस उनकी स्थिति में सुधार के लिए सकारात्मक कदम उठाएगी।

इसके बाद कांग्रेस ने आरक्षण को लेकर एक अहम प्रतिबद्धता के बारे में कहा है कि वह अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं गरीब सामान्य वर्ग को मिलने वाले आरक्षण पर 50 प्रतिशत का कैप हटाएगी। ज्ञातव्य है कि 1993 में मंडल कमीशन की अनुशंसाओं को लागू करने के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण की सीमा पर 50 प्रतिशत की सीमा तय कर दी थी।

हालांकि कांग्रेस ने भाजपा के आर्थिक आधार पर आरक्षण यानी गरीब सवर्णों के (ईडब्ल्यूएस) के लिए नौकरियों एवं उच्च शिक्षा में दस प्रतिशत आरक्षण को खारिज नहीं करने की बात कही है। लेकिन उसने यह जरूर कहा है कि यदि कांग्रेस की सरकार बनी तो यह 10 प्रतिशत आरक्षण को बिना किसी भेदभाव के वह सभी जाति और समुदायों के लिए लागू कराएगी। हालांकि इसके लिए एक और संवैधानिक संशोधन की आवश्यकता होगी ताकि अन्य समुदायों को भी इसका लाभ मिल सके। इसी संबंध में एक और अहम वादा करते हुए कांग्रेस ने कहा है कि वह अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षित सभी वर्गों को एक साल के भीतर भरेगी। ध्यातव्य है कि कांग्रेस के नेता राहुल गांधी अपने भाषणों में ग्रुप ए, ग्रुप बी और ग्रुप सी की नौकरियों में इन वर्गों की अपर्याप्त भागीदारी को लेकर सवाल उठाया है।

इसी तरह **कांग्रेस ने सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों में संविदा के आधार पर भर्तियों को लेकर अहम घोषणा की है। उसने कहा है कि वह संविदा की जगह नियमित भर्तियां करेगी और अभी जो संविदाकर्मी हैं, उनका नियमितीकरण करेगी।**

सरकारी नौकरियों व उच्च शिक्षा में भागीदारी के अलावा कांग्रेस ने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों के अन्य मुद्दों जैसे उनके घर, रोजगार, भूमिहीनता के संबंध में भी वायदे किए हैं। मसलन उसने कहा है कि वह घर बनाने और व्यवसाय शुरू करने के लिए इन वर्गों के लोगों को मिलने वाले लोन की सीमा को बढ़ाएगी। इसके साथ ही उसने भूमिहीनों को जमीन वितरित करने का वादा भी किया है।

सरकारी ठेकेदारी में अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों की अधिक से अधिक भागीदारी हो, इसके लिए उसने सार्वजनिक खरीद नीति का दायरा बढ़ाने की बात कही है।

कांग्रेस ने यह पहली बार अपने घोषणपत्र में कहा है कि वह सामाजिक न्याय का संदेश फैलाने वाले समाज सुधारकों की जीवनी और उनके कार्यों को विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल करेगी। उसका यह वादा इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि पिछले दस सालों में भाजपा सरकार ने हिंदुत्व व वर्चस्ववाद के संपोषकों की जीवनियों को पाठ्यक्रमों में शामिल करने का हर संभव प्रयास किया है। इतना ही नहीं, कांग्रेस ने यह भी कहा है कि वह हर जिले में आंबेडकर भवन-सह-पुस्तकालय भी खोलेगी। उसका यह वादा उत्तर प्रदेश में रामस्वरूप वर्मा की याद दिलाती है, जिन्होंने चौधरी चरण सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल में वित्तमंत्री रहते हुए पूरे उत्तर प्रदेश में इस तरह की योजना की शुरुआत की थी।

ऐसे ही अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति व पिछड़ा वर्ग के छात्रों को मिलनेवाले वजीफे को दोगुना करने, विशेष रूप से उच्च शिक्षा के लिए अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति समुदाय के छात्रों को विदेशों में पढ़ने में मदद करने तथा पीएचडी छात्रवृत्ति की संख्या को दोगुनी करने की बात कही गई है। एक अहम घोषणा यह भी कि उसने प्रखंड स्तर पर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र-छात्राओं के लिए आवासीय विद्यालयों का निर्माण कराएगी।

सामाजिक न्याय के तहत ही कांग्रेस ने संविधान के अनुच्छेद 15(5) के संदर्भ में एक कानून बनाने की बात कही है ताकि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़ा वर्ग के छात्रों को निजी शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण दिया जा सके।

अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए विशेष घटक योजना के लिए संसाधनों के आवंटन को अधिकृत करने और योजनाओं के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए एक कानून बनाने की बात भी कांग्रेस ने कही है। उसका यह वादा मौजूदा नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा इस संदर्भ में किए गए संशोधन के उलट है, जिसके कारण अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्गों के लिए विशेष घटक योजना के तहत आवंटित राशि का उपयोग दूसरे मदों में कर लिया जाता है।

अनुसूचित जनजातियों के लिए एक अहम घोषणा यह भी कि कांग्रेस सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में उन सभी बसाहटों को अनुसूचित क्षेत्र में अधिसूचित करने के लिए प्रतिबद्ध है, जहां अनुसूचित जनजाति के लोग बहुसंख्यक हैं, लेकिन वर्तमान समय में वे अनुसूचित क्षेत्र से बाहर हैं।

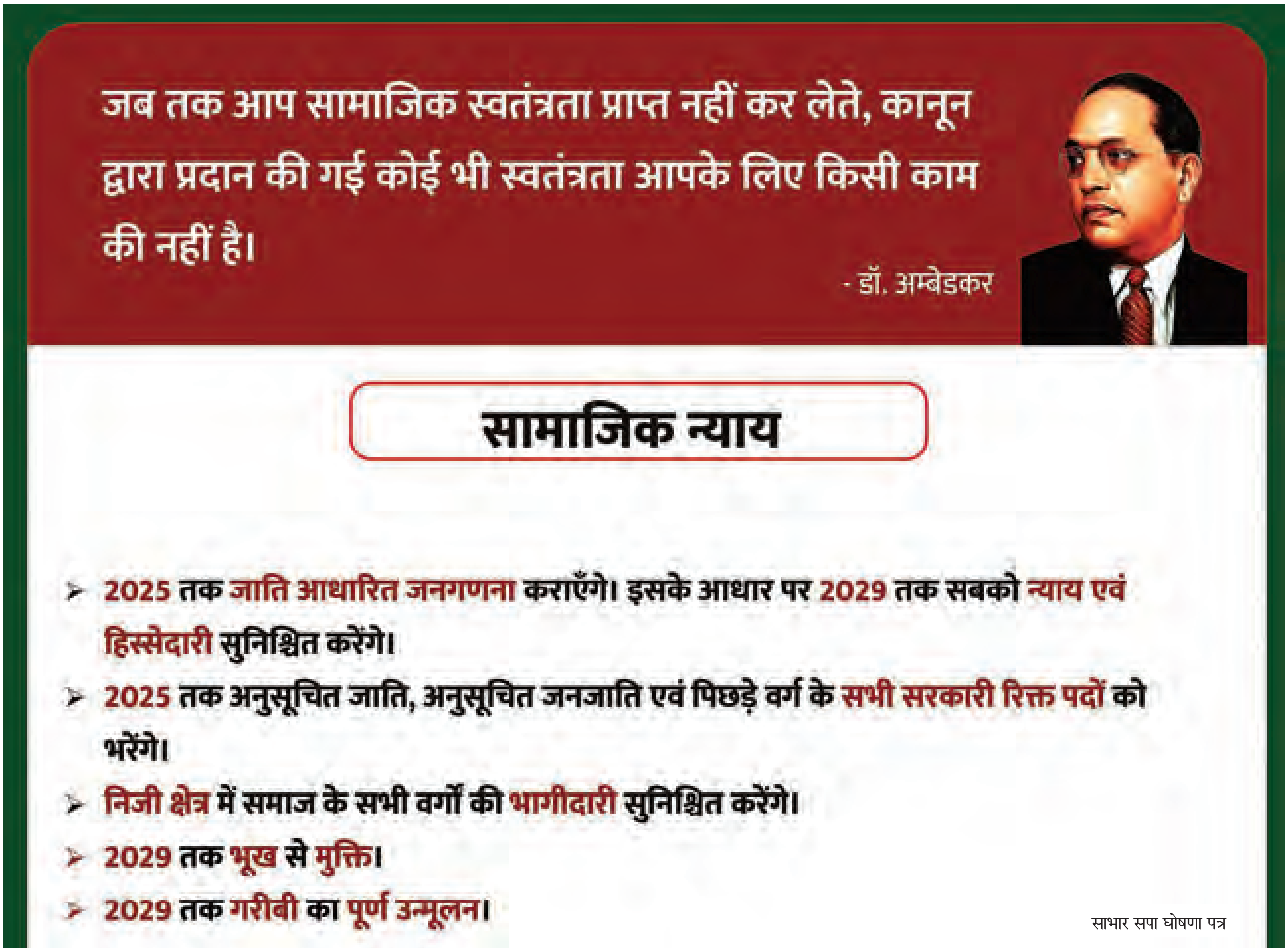
कांग्रेस की ओर से हाथ से मैला उठाने की कुप्रथा पर रोक लगाने हेतु कारगर उपाय किए जाने की बात कही गई है। उसने कहा है कि ऐसा काम करने वालों को दूसरे कार्यों के लिए कुशल बनाया जाएगा और उन्हें नौकरी प्रदान की जाएगी। उनके लिए सम्मानित और सुरक्षित जीवन सुनिश्चित किया जाएगा। साथ ही यह भी कहा गया है कि हाथ से मैला उठाने वाले कर्मियों के नियोजन का प्रतिषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम 2013 को सख्ती से लागू किया जाएगा और हाथ से मैला उठाने के काम पर रखने वाले व्यक्ति को दंडित किया जाएगा। साथ ही नालियों व टंकियों की साफ-सफाई के लिए मशीनों के अधिकाधिक उपयोग की बात भी कही गई है। कांग्रेस द्वारा यह घोषणा इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हर साल नालियों व टंकियों की सफाई के दौरान कर्मियों के बेमौत मारे जाने की खबरें आती रहती हैं।

अनुसूचित जनजाति समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण वादा करते हुए कांग्रेस ने कहा है कि वह वनाधिकार अधिनियम 2006 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक राष्ट्रीय मिशन स्थापित करेगी। इसके लिए विशेष बजट, योजना व विभाग की स्थापना की जाएगी। साथ ही उसने यह भी कहा है कि वह एक साल के भीतर सभी लंबित वनाधिकार दावों का निपटान सुनिश्चित करेगी और छह महीने के भीतर सभी अस्वीकृत दावों की समीक्षा के लिए एक प्रक्रिया बनाएगी। इतना ही नहीं, कांग्रेस ने यह भी कहा है कि वह अनुसूचित जनजातियों के इलाकों में ग्राम सरकार और स्वायत्त जिला सरकार की स्थापना के लिए राज्यों में पेसा अधिनियम के अनुरूप कानून बनाएगी।

ऐसे ही विमुक्त और घुमंतू जनजातियों के बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करने के वादे के साथ कांग्रेस ने रेनके आयोग की सिफारिशों को लागू करने की बात कही है।

बहरहाल, कांग्रेस ने अपने घोषणापत्र में रोहित वेमुला का नाम भी उद्धृत किया है और कहा है कि वह शैक्षणिक संस्थानों में वंचित समुदायों के छात्रों के मध्य होनेवाले भेदभाव को रोकने के लिए रोहित वेमुला अधिनियम बनाएगी। ▪

सपा के घोषणा पत्र में सामाजिक न्याय


जब तक आप सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर लेते, कानून द्वारा प्रदान की गई कोई भी स्वतंत्रता आपके लिए किसी काम की नहीं है।

- डॉ. अम्बेडकर

सामाजिक न्याय

- 2025 तक जाति आधारित जनगणना कराएँगे। इसके आधार पर 2029 तक सबको न्याय एवं हिस्सेदारी सुनिश्चित करेंगे।
- 2025 तक अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़े वर्ग के सभी सरकारी रिक्त पदों को भरेंगे।
- निजी क्षेत्र में समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करेंगे।
- 2029 तक भूख से मुक्ति।
- 2029 तक गरीबी का पूर्ण उन्मूलन।

साभार सपा घोषणा पत्र

▪ **नरेन्द्र प्रताप**

जानता का मांग पत्र हमारा अधिकार 2024 नाम से समाजवादी पार्टी में अपना घोषणा पत्र जारी किया। समाजवादी पार्टी ने 20 पेज के इस घोषणा पत्र में संपूर्ण समाज के अधिकार के लिए वचनबद्धता जाहिर की है। सपा घोषणा पत्र में अखिलेश यादव की 5 तस्वीरें हैं इसके आलावा लोहिया की 5, अंबेडकर की 2, मुलायम सिंह की 2 गाँधी जी की एक चौधरी चरण सिंह की एक और डॉ ए पी जे अब्दुल कालम की एक तस्वीर लगी है। इस घोषणा पत्र में समाजवादी पार्टी ने पीडीए की परिभाषा से लेकर पर्यावरण ग्रामीण विकास अर्थव्यवस्था शहरी विकास पर्यटन और परिवहन तक की बात की है। समाजवादी पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में सामाजिक न्याय नाम से भी एक पेज रखा है। पृष्ठ 09 पर 07 पंक्तियों में सामाजिक न्याय की बात करते हुए सपा ने डॉ भीम राव अंबेडकर की फोटो भी लगाई है।


घोषणा पत्र का विमोचन

जिसमें की पांच बिंदुओं पर चर्चा की गई है। इन पांच बिंदुओं पर पहले बिंदु जाति आधारित जनगणना, सबको न्याय सुनिश्चित करने की बात की गई है। अपने दूसरे बिंदु में समाजवादी पार्टी ने अनुसूचित जाति जनजाति एवं पिछड़े वर्ग के रिक्त पदों को भरने की बात की है। साथ ही साथ अपने तीसरे बिंदु में समाजवादी पार्टी में निजी क्षेत्र में समाज के सभी वर्गों को भागीदारी सुनिश्चित किए जाने की बात की है। 2029 तक भूख और गरीबी उन्मूलन का लक्ष्य रखा गया है इसके अलावा समाजवादी पार्टी ने अन्य पेज पर भी सामाजिक न्याय से संबंधित बातें की है। लेकिन सामाजिक न्याय के क्षेत्र में समाजवादी पार्टी उतना स्पष्ट नहीं हो सकी है। जितना की उसकी सहयोगी दल कांग्रेस स्पष्ट है। समाजवादी पार्टी सामाजिक न्याय के मुद्दे पर बहुत स्पष्ट नहीं है साथ ही साथ वह बातों में गोल मटोल कर रही है। ▪

भाजपा के घोषणापत्र में सामाजिक न्याय



साभार भाजपा घोषणा पत्र

भाजपा के घोषणा पत्र मे सामाजिक न्याय शब्द कहीं नहीं आया है। लगभग 70 पेज के घोषणापत्र में पृष्ठ 32 पर सामाजिक न्याय सम्बन्धी बातें देखने को मिलती हैं इसमें कहा गया है कि उसने हमेशा से कमजोर और वंचित परिवारों के कल्याण को प्राथमिकता दी है। वंचितों को वरीयता और अंत्योदय जैसे मूल्य हमारे 'सबका साथ, सबका विकास' के मंत्र का मार्गदर्शन करते हैं। हम समाज के सभी वंचित वर्गों के जीवन में गुणात्मक सुधार लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम सर्वसमाज को साथ लेकर विकसित और समावेशी भारत बनाने के लिए संकल्पित हैं।

इसकी पहली लाइन है-

- **जनजातीय समाज के योगदान को मान्यता-** हमने जनजातीय समुदायों द्वारा किए गए योगदानों की मान्यता के लिए जनजातीय गौरव दिवस की स्थापना की है। हम इसे आगे बढ़ाएंगे और वर्ष 2025 (भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जन्म जयंती) को जनजातीय गौरव वर्ष के रूप में घोषित करेंगे।

घोषणा पत्र में जनजातियों से सम्बंधित लंबी चौड़ी बाटें हैं, ओबीसी और एस सी का नाम भी आया है, जो इस प्रकार है-

- प्रत्येक जिले में समिति-**(ओबीसी, एससी और एसटी)**-हम प्रत्येक जिले में एक समिति का गठन करके हर जन-कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सभी तक पहुंचाएंगे। इस समिति में ओबीसी, एससी और एसटी समुदायों का भी उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाएगा।

इसके आलावा ज्यादातर बातें हजारों करोड़ रुपए से ओबीसी/एससी/एसटी का कल्याण करने की बात तो है पर हिस्सेदारी और हक़ की बातें नदारत हैं।

- **पीएम-सूरज-** हम पीएम सूरज के माध्यम से पात्र व्यक्तियों को सरल ऋण



घोषणा पत्र का विमोचन

प्रदान करके उनको आजीविका के अवसर देंगे।

- **लघु वन उपज को बढ़ावा-** हम नवाचारी और प्रौद्योगिकी-प्रेरित स्टार्टअप्स को उत्पादन और मूल्य वर्धन के लिए वाणिज्यिक रूप से सक्षम और वन-आधारित उद्यमों की शुरुआत करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
- **एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों की स्थापना-** हमने 740 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों के लक्ष्य के साथ जनजातीय बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की है।
- हम पीएम जनमन के माध्यम से 24,000 करोड़ रुपये का निवेश करके विशेष पिछड़ी जनजाति समूह (PVTG) की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को समग्र आबादी के स्तर पर लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- **एससी, एसटी और ओबीसी समुदायों का प्रतिनिधित्व-हमारे 60% वर्तमान मंत्री एससी, एसटी और ओबीसी समुदाय से हैं। हमने राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया है तथा सभी गरीब कल्याण योजनाओं का लाभ एससी, एसटी और ओबीसी परिवारों तक पहुंचाया है। हम अपनी विकसित भारत की यात्रा में सबका साथ, सबका विकास एवं सभी वर्गों की पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करेंगे।** हिस्सेदारी के नाम पर 60% प्रतिनिधित्व एससी, एसटी और ओबीसी मंत्री बनाये जाने की बात की गई है इसके आलावा ओबीसी आयोग के गठन की बात की गई है।
- **आजीविका के अवसरों का विस्तार-** हम मुद्रा योजना के अंतर्गत ऋण सीमा को दोगुना को अधिक आजीविका के कर 20 लाख रुपये करेंगे, जिससे ओबीसी, एससी और एसटी समुदाय के परिवारों अवसर मिलेंगे। हम पीएम स्वनिधि और पीएम विश्वकर्मा योजना जैसी सफल योजनाओं का भी विस्तार करेंगे। इसके साथ ही, इको टूरिज्म एवं होमस्टे से भी रोजगार के नए अवसरों का सृजन करेंगे।
- **छात्रवृत्ति योजनाओं का विस्तार-** हम मेधावी छात्रों के लिए मौजूदा छात्रवृत्ति का विस्तार करके यह सुनिश्चित करेंगे कि ओबीसी, एससी और एसटी परिवारों का कोईभी छात्र उच्च शिक्षा से वंचित न रहे।
- हम ओबीसी, एससी और एसटी समुदायों के लिए मौजूदा कौशल विकास के अवसरों को बढ़ाएंगे और उनके मौजूदा कौशलों को प्रमारीकरण करेंगे।
- **घुमंतू जाति के परिवारजनों का सशक्तिकरण-** हमने घुमंतू जाति के परिवारजनों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं शुरू की हैं, जिससे उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। हम इन सभी योजनाओं का और विस्तार करेंगे।
- सफाई कर्मचारियों का सशक्तिकरण-हमने सफाई कर्मचारियों के लिए नमस्ते एवं अन्य कल्याणकारी योजनाएं शुरू की है, जिससे सफाई कर्मचारियों के लिए सुरक्षा, सम्मान और आजीविका सुनिश्चित की है। इन सभी योजनाओं का हम आगे भी विस्तार करेंगे।
- दिव्यांगों के लिए किफायती उपकरण का निर्माण-इम दिव्यांगों के लिए किफायती एवं स्वदेशी उपकरणों के विकास को प्रोत्साहन देना जारी रखेगे ताकि भारत ऐसे उपकरणों के निर्माण में आत्मनिर्भर बन सके।हम पीएम आवास योजना के अंतर्गत विशेष रूप से दिव्यांग जनों की आवास आवश्यकताओं को प्राथमिकता देकर उनके अनुरूप किफायती एवं सुलभ आवास प्रदान करते रहेंगे।
- ट्रांसजेंडरों के लिए गरिमा ग्रह के नेटवर्क का विस्तार-हम ट्रांसजेंडरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए गरिमा ग्रह के नेटवर्क का विस्तार करेंगे। हम देश भर में ट्रांसजेंडर्स की पहचान सुनिश्चित करने के लिए पहचान पत्र जारी करेंगे एवं सभी पात्र ट्रांसजेंडर की आयुष्मान भारत के अंतर्गत कवर करेंगे।
- **भाषाई अल्पसंख्यकों का संरक्षण-** हम भाषाई अल्पसंख्यकों की भाषाओं के संरक्षण एवं अनुवाद की सुविधा के लिए भाषिनी जैसे टेफ्रोलॉजी-बेरड सिस्टम का विस्तार करेंगे। ▪



नरेन्द्र प्रताप
मो.न. +91 94531 71770

मोदी सरकार में जुमले


प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

2014 में लोकसभा चुनाव के दौरान नरेंद्र मोदी की विकास पुरुष के रूप में जबरदस्त छवि निर्माण की गयी थी। जिसमें कारपोरेट घरानों, मीडिया, पब्लिक रिलेशन एजेंसियों और संघ परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे 'सबका साथ, सबका विकास' और 'अच्छे दिनों' के नारे के साथ सत्ता में आये थे, लेकिन फिर जल्दी ही सारे वायदे ताक पर रख दिए गये और इसकी जगह पर गाय, मंदिर, हिन्दू राष्ट्र, असहिष्णुता और संस्थानों के भगवाकरण जैसे मुद्दों को विमर्श के केंद्र में ले आया गया। विपक्ष जब एक पर घेराने की कोशिश करता तो दूसरे पर शिफ्ट हो जाते। जनता का ध्यान भटकने के लिए एक के बाद एक नारे और जुमले मार्केट में लाये गए। सबका साथ सबका विकास, अच्छे दिन से होते हुए मै भी चौकीदार तो मोदी का परिवार तक पहुंच चुके हैं। बसावन इंडिया एनडीए सरकार में वे नारे अथवा जुमले जो मार्केट में आए और समय के साथ चले भी गए उनकी पड़ताल करेगी की इन नारों में कहां तक सच्चाई है और वह समय के साथ गायब कैसे हो गए

▪ **बसावन इंडिया डेस्क**

किस नारे में कितना दम
सबका साथ सबका विकास

यह मोदी सरकार का अब तक का सबसे टिकाऊ नारा है जो दो कार्यकाल तक लगातार चल गया। ` सबका साथ सबका विकास का



न्युक्ति की मांग करते हुए आरक्षित वर्ग के युवा

नारा लेकर चली मोदी सरकार ने जब-जब अपने मंत्रिमंडल का विस्तार किया तो बड़े ही जोर-शोर से सबके जातिवार आंकड़े भी दिए और 27% भागीदारी की भी बात की लेकिन मोदी सरकार ने जब नौकरशाही में भागीदार की बात आई तो बैकफुट पर नजर आई। मोदी सरकार ने सवर्णों को तो बिना मांगे ही 10% ईडब्ल्यूएस का आरक्षण दे दिया लेकिन पिछड़ों

का दिया जाने वाला आरक्षण खा गई। चाहे बैक डोर से लैटरल एंट्री की बात हो अथवा उत्तर प्रदेश में डबल इंजन की सरकार में आरक्षण घोटाले की बात है, हर जगह सरकार सिर्फ सवर्ण खेमे में ही नजर आई। उत्तर प्रदेश में शिक्षक भर्ती घोटाले में आरक्षित वर्ग के छात्रों को आज तक उनका हक नहीं मिला, ना ही उन्हें जॉइनिंग दी गई। वे 2 साल से लगातार लखनऊ के इको गार्डन में धरने पर बैठे रहे है।

अच्छे दिन



तत्कालीन कांग्रेस सरकार से में बढ़ रही बेताशा महंगाई से परेशान जनता कुछ ऐसा चाहती थी की आने वाले समय में उसे महंगाई बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर राहत मिले ऐसे में एनडीए अच्छे दिनों का वादा करके लोगों को महंगाई से मुक्ति दिलाने और रोजगार के मुद्दे पर अच्छे दिनों का नारा दिया अच्छे दिन आने वाले हैं। अच्छे दिन की परिभाषा नहीं बताई कि अच्छे दिन कैसे होंगे। 2014 के चुनाव में भाजपा का यह नारा अच्छे दिन आने वाले हैं मार्केट में खूब चला लेकिन भाजपा के और उसके सहयोगी दलों के सत्ता में आते ही लोगों ने सालों तक अच्छे दिनों का इंतजार किया इसके बाद 2019 के आम लोकसभा चुनाव में भी लोगों ने मोदी जी की गारंटी को सिखाते हुए एक बार फिर से अच्छे दिनों का इंतजार किया। अच्छे दिनों का नारा 2014 के ही इलेक्शन में काम आया बेतहाशा पड़ रही महंगाई बेरोजगारी और 15 लाख के जुमले पर सरकार को एक बार फिर से बैक फुट पर आना पड़ा और अच्छे दिनों की बात नहीं की गई। धीरे-धीरे अच्छे दिनों का नारा दूसरे चीजों पर शिफ्ट कर गया।

प्रति वर्ष दो करोड़ रोजगार

बात रोजगार की आई जो एक आदमी



के जीवन में बहुत महत्व रखता है, उसकी रोजी-रोटी उसके रोजगार से ही चलती है। जब उसकी रोजी-रोटी पर ही संकट आने लगे तो उसे सब नारे फीके लगने लगते हैं, लेकिन अब चीज रोजगार से हटकर दूसरे चीजों पर शिफ्ट कर चुकी। रोजगार फिर से एक जुमला साबित हुआ देश में बेतहाशा बढ़ रही बेरोजगारी की दर से परेशान भाजपा ने यहां तक की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पकौड़ा तलना तक को रोजगार की श्रेणी में गिनना शुरू कर दिया अब तक बेरोजगारों का रोजगार के मुद्दे से मोह भंग हो गया। फिर एक बार फिर से धर्म की चासनी को आगे बढ़ाया गया अयोध्या मुद्दा का हल हो चुका था। वहां राम मंदिर भी बन गया। शुरू हो गई। लोगों की धार्मिक भावनाएं एक बार फिर से उमड़ पड़ी अब अयोध्या में राम मंदिर की सफलता के बाद काशी की ज्ञानवापी और मथुरा के मुद्दे को भी उभर जाने का प्रयास किया जाने लगा।

बहुत हुई महगाई की मार अबकी बार मोदी सरकार

महंगाई बहुत हुई महंगाई की मार अबकी



बार मोदी सरकार 2019 के चुनाव के दौरान ही यह नारा गायब हो चुका था। इसका कारण था की सरकार महंगाई पर अंकुश लगा पाने में असफल रही। नोटबंदी नोटबंदी के दौरान बहुत से कारखाने का बंद हो जाना 2019 के चुनाव के दौरान कोरोना भी देश में दस्तक दे चुका था। सरकार फिर सत्ता में आई, लेकिन पेट्रोल डीजल सीएनजी एलपीजी जैसे महत्वपूर्ण उत्पादों पर का मूल्य नियंत्रण कर पाने में असफल रही, जिसका परिणाम यह रहा की सामान्य उपभोग की वस्तुएं दाल, तेल, सब्जियां और अन्य खाद्य पदार्थ अपनी दो से तीन गुनी कीमतों पर बिकने लगे लेकिन इसका फायदा किसी को नहीं मिलकर बिचौलियों को ही मिलता रहा। 2014 में 60 रुपए लीटर बिकने वाला पेट्रोल 100 रुपए क्रॉस कर गया। 55 रुपए लीटर मिलने वाला डीजल 95 रुपए लीटर हो गया। सीएनजी जो 40 रुपए के आसपास हुआ करती थी। वर्तमान में लगभग 90 रुपए के आसपास मिल रही। एलजी का जो सिलेंडर 400 रुपए में मिलता था अब वह सिलेंडर 1200 रुपए में हो गया। इसके साथ ही साथ दाल जो 60 रुपए किलो हुआ करती थी अब वह डेढ़ सौ रुपए किलो मिल रही है सरसों का तेल 80 रुपए लीटर हुआ करता था जो 200 रुपए के पार पहुंच गया इसके साथ लहसुन नहीं तो रिकॉर्ड ही तोड़ दिया यह इसकी कीमत 500 रुपए प्रति किलोग्राम पहुंच गई टमाटर और प्याज भी महंगे रहे। जिससे कि एक सामान्य आदमी का बजट बिगड़ गया अब यह नारा किसी पेट्रोल पंप पर नहीं दिखाई देता।



15 लाख

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी एक चुनावी जनसभा में विदेश में जमा काला धन का जिक्र किया था। उन्होंने कहा था कि विदेश में जमा काला धन यदि वापस आया तो हर एक के खाते में 15-15 लाख रुपए आएंगे लेकिन नोटबंदी और उपाय करने के बाद ही कोई फायदा नहीं हुआ। कोई काला धन नहीं मिला बल्कि उल्टे ही इसका नुकसान हुआ। बाद में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इसे चुनावी जुमला कहकर खारिज कर दिया।



भ्रष्टाचार

2014 में सरकार ने मोदी सरकार ने भ्रष्टाचार को एक प्रमुख मुद्दा बनाया भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों से निपटाने की बात की लेकिन जब भ्रष्टाचारियों को दंड देने की बारी आई तो ज्यादातर भ्रष्टाचारी भाजपा के खेमे में शामिल हो गए। उत्तर प्रदेश में भी मोदी

का चेहरा हैबीरा तो बात उत्तर प्रदेश में भी भ्रष्टाचार की आती है उत्तर प्रदेश में परीक्षा भर्ती में बड़े पैमाने पर पेपर लीक की घटनाएं भी हुई और अब तो इलेक्टोरल बांड एक बड़ा घोटाला के रूप में सामने आ चुका है।



बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ का अभियान

अब सिर्फ एक चुनावी जुमला साबित हो रहा है। अंतर्राष्ट्रीय क्राइम रिपोर्ट में भाजपा शासित प्रदेश उत्तर प्रदेश टॉप पर है। महिला अपराध के मामले में उत्तर प्रदेश देश में पहले नंबर पर है। एक तरह से देश में महिलाओं से सबसे ज्यादा अपराध उत्तर प्रदेश में होता है। राष्ट्रीय महिला आयोग की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक पूरे साल में महिलाओं के खिलाफ अपराध की 28,811 शिकायतें मिलीं। इसमें 50 फीसदी से ज्यादा मामले सिर्फ उत्तर प्रदेश से जुड़े रहे। आंकड़ों के अनुसार उत्तर प्रदेश में पिछले वर्ष 2023 में 16,109 शिकायतें महिलाओं से जुड़े अपराध में सामने आए. वहीं दूसरे नंबर पर दिल्ली है जहाँ एक साल में 2411 शिकायतें दर्ज हुईं। इसी कड़ी में 1343 मामलों के साथ महाराष्ट्र तीसरे और 1312 मामलों के साथ बिहार चौथे नंबर पर है। टॉप 5 में पांचवें पायदान पर मध्य प्रदेश है जहाँ इसी तरह की 1165 शिकायतें दर्ज हुई हैं।

महिला खिलाडियों ने तो भाजपा सरकार के एक नेता के विरुद्ध बाकायदा कई दिनों तक जंतर मंतर पर अनशन पर रही।



5 किलो राशन

5 किलो राशन देकर भले ही सरकार अपनी पीठ थप थपा रही हो लेकिन यह दूसरी नाकामी है। रोजगार भ्रष्टाचार को दबाए रखने का जरिया है यह भी सरकार सबको रोजगार देती तो मुफ्त में राशन देने की नौबत क्यों आती? इसका दूसरा पहलू यह है कि आज जबकि व्यक्ति को आज निर्भर होना चाहिए ऐसे में लोग 5 किलो राशन पर अपना जीवन काट रहे हैं।



हवाई चप्पल से हवाई जहाज

मोदी जी ने देश की जनता से यह वादा किया था कि वह हवाई चप्पल पहनने वाले को हवाई जहाज की यात्रा करवाएंगे इस बात में कोई शक नहीं है कि वर्तमान एनडीए सरकार में वायु परिवहन सेवाओं में सुधार हुआ है लेकिन दूसरा पक्ष यह भी है आज की तारीख में जूते से उतारकर हवाई चप्पल पहनने वालों की संख्या भी बढ़ गई है।

सौ स्मार्ट सिटी

2014 में भाजपा ने 100 स्मार्ट सिटी बनाने का वायदा किया था लेकिन समय के साथ स्मार्ट सिटी का वादा भी बदल गया। अब जबकि सब कुछ वैसे ही जी है जैसा की पहले था तो लोगों ने स्मार्ट सिटी की बात भी भूल गए हैं।

चायवाला से चौकीदार अब मोदी का परिवार


स्मार्टसिटी रायपुर

2014 का चायवाला जुमले का स्थान 2019 के आम चुनाव में मैं भी चौकीदार ने ले लिया । 2019 में यह जुमला हिट साबित हुआ, जुमला बहुत पॉपुलर हुआ था। भाजपा ने बढ़चढ़ कर 'मैं भी चौकीदार' का सोशल मीडिया पर ट्रेंड चलाए लेकिन धीरे-धीरे यह नारा भी गायब हो गया है, अब जबकि भाजपा



में परिवारवाद पर सवाल उठने लगे तो मोदी को आगे कर मोदी का परिवार नाम से हैस्टैग चलाया गया जिसमें कि स्थिति तब और भी



हास्यास्पद हो गई, जब बृजभूषण शरण सिंह जैसे लोग मोदी का परिवार ट्विटर पर लिखने लगे।

मोदी की गारंटी



'मोदी गारंटी' के साथ 2024 के लोकसभा चुनाव मैदान में उतरी लेकिन मोदी सरकार के अब दस साल हो गए हैं, लेकिन 2014 में किए गए वादे पूरे नहीं है। ऐसे में मोदी गारंटी का लोकसभा चुनाव में कोई भरोसा नहीं कर रहा है, 2024 का लोकसभा चुनाव मुद्दों पर हो रहा है, जिसमें महंगाई और रोजगार, जमीनी स्तर पर बड़ा मुद्दा है। कांग्रेस और विपक्षी दल इसी को लेकर चुनावी मैदान में है, क्योंकि मोदी सरकार इन दोनों ही मुद्दों पर फेल रही है। ▪

निशाने पर चुनाव आयोग



सामान्य लोकसभा चुनाव 2024 की अधिसूचना जारी होने से पूर्व ही चुनाव आयोग विवादों में रहा, एक तरफ चुनाव आयुक्त का इस्तीफा और नए चुनाव आयुक्त की नियुक्ति दूसरी तरफ ईवीएम के मुद्दे का कोर्ट में होना। निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव अधिसूचना जारी किए जाने से ठीक पहले निवर्तमान निर्वाचन आयुक्त अरुण गोयल ने इस्तीफा दे दिया, इस्तीफ़ा देने की कुछ ठोस वजहें तो स्पष्ट नहीं हुई लेकिन जब देश का चुनाव सर पर हो तो ठीक येन वक्त पर इस्तीफ़ा देना गंभीर विषय है।

नए चुनाव आयुक्त

सुखबीर सिंह संधु

उत्तराखंड के पूर्व मुख्य सचिव डॉ. सुखबीर सिंह संधु को नए चुनाव आयुक्त के रुप में चयनित किया गया है। सुखबीर सिंह संधु 1988 बैच के एक सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी हैं। संधु को मुख्यमंत्री बने पुष्कर सिंह धामी के समय मुख्य सचिव नियुक्त किया गया था. इससे पहले संधु भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) के अध्यक्ष के रूप में सेवा कर चुके हैं।

ज्ञानेश कुमार

ज्ञानेश कुमार भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) के 1988 बैच के सेवानिवृत्त अधिकारी हैं, और केरल कैडर से ताल्लुक रखते हैं। ज्ञानेश कुमार सेवानिवृत्ति से पहले संसदीय मामलों के मंत्रालय तथा अमित शाह के नेतृत्व वाले सहकारिता मंत्रालय में सचिव पद पर रह चुके हैं।

जिस वक्त केंद्र सरकार ने संसद में जम्मू एवं कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाने का बिल पारित किया था, उस वक्त ज्ञानेश कुमार केंद्रीय गृह मंत्रालय में कश्मीर डिविज़न के प्रभारी हुआ करते थे।

इसके बाद उन्हें सहकारिता मंत्रालय का सचिव नियुक्त किया गया, जिससे पहले वह संसदीय मामलों के मंत्रालय के सचिव रहे थे।

वह सेवानिवृत्ति की आयु के बाद भी पद पर बनाए रखे गए, और अंततः 31 जनवरी, 2024 को सेवानिवृत्त हुए।

सुप्रीम कोर्ट में ईवीएम

सुप्रीम कोर्ट ने इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन यानी ईवीएम और वोटर वेरिफ़ियेबल पेपर ऑडिल ट्रेल यानी वीवीपैट के 100 फ़ीसद मिलान की मांग करने वाली सभी याचिकाओं को खारिज कर दिया है। जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दिपांकर दत्ता की बेंच ने कहा, "हमने याचिकाओं को सुना. इन याचिकाओं में पेपर बैलेट सिस्टम पर लौटने, वीवीपैट मशीन से निकलने वाली पर्चियों की पुष्टि और इलैक्ट्रॉनिक गिनती के अलावा वीवीपैट से निकली पर्चियों की 100 फ़ीसदी गिनती करवाए जाने की मांग की गई थी।"

"हमने मौजूदा प्रोटोकॉल, तकनीकी पहलुओं और रिकॉर्ड पर मौजूद डेटा को ध्यान में रखते हुए इन सभी को ख़ारिज कर दिया है।"

हालांकि ये फ़ैसला सुनाने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को कई ख़ास बदलाव करने के आदेश दिए हैं।

पहला निर्देश ये है कि सिंबल के लोड होने की प्रक्रिया पूरी होने के बाद सिंबल लोडिंग यूनिट (एसएलयू) को सील किया जाए। दूसरा ये कि चुनाव के नतीजों की घोषणा के बाद एसएलयू को कम से कम 45 दिन के लिए सीलबंद कर ही रखा जाए।

एसएलयू को पहले कंम्यूटर से जोड़कर इस पर चुनाव चिह्न लोड किए जाते हैं जिसके बाद वीवीपैट स्लिप पर पार्टी का चुनाव चिह्न और उम्मीदवार का नाम छापने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

इन एसएलयू को खोला जाएगा और इसकी जांच उसी तरह की जाएगी, जिस तरह ईवीएम की होती है।

चुनाव आयोग से जुड़े सूत्रों के हवाले से अख़बार ने लिखा है कि हर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में वीवीपैट पर चुनाव चिह्न लोड करने के लिए एक से दो एसएलयू का इस्तेमाल होता है। चुनाव संपन्न होने के बाद इससे संबंधित किसी तरह की शिकायत के मद्देनज़र अब इन्हें इस्तेमाल के बाद 45 दिनों तक सुरक्षित रखा जाएगा।

इसके अलावा कोर्ट ने ये भी कहा कि उम्मीदवार चाहें तो ईवीएम के वेरिफ़िकेशन की मांग कर सकते हैं।

चुनाव में दूसरे या तीसरे नंबर पर रहे उम्मीदवारों की शिकायत पर चुनाव आयोग ईवीएम निर्माता को ईवीएम के माइक्रोचिप के वेरिफ़िकेशन के लिए कह सकता है।

उम्मीदवार किसी संसदीय या विधानसभा चुनाव क्षेत्र में 5 फ़ीसदी ईवीएम के मेमोरी सेमीकंडक्टर की जांच की मांग कर सकता है।

उम्मीदवार की लिखित गुज़ारिश पर वेरिफ़िकेशन किया जाएगा, जिसे ईवीएम निर्माता के इंजीनियरों की एक टीम अंजाम देगी।

फ़ैसले के अनुसार, उम्मीदवार या प्रतिनिधि पोलिंग स्टेशन के नंबरों या सीरियल नंबरों के हिसाब से ईवीएम की पहचान कर सकते हैं।

हालांकि कोर्ट ने कहा कि वेरिफ़िकेशन के लिए गुज़ारिश चुनाव के संपन्न होने के 7 दिन को भीतर की जानी चाहिए और इसके लिए खर्च उम्मीदवार को ही उठाना होगा।

अगर वेरिफिकेशन के दौरान ये पाया गया कि ईवीएम के साथ छेड़छाड़ हुई है तो चुनाव आयोग को उम्मीदवारों ये पैसा लौटाना होगा। ▪



आनंद
मो.न. +91 8130577546

चेहरा क्यों देखते हो...

▪ बसावन इंडिया डेस्क

देश में इस समय आम चुनाव चल रहे हैं जिसमे से सबसे महत्वपूर्ण चुनाव उत्तर प्रदेश का है, कहा जाता है कि दिल्ली की गद्दी का रास्ता लखनऊ से होकर निकलता है। यदि हम उत्तर प्रदेश में प्रमुख राजनीतिक दल भाजपा, कांग्रेस,बसपा और सपा के चेहरों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि पिछले चुनावों की तुलना में एक बात है, आम चुनाव 2024 कुछ विशेष चेहरों तक केन्द्रित हो कर रह गया है। वैसे तो इन दलों ने अपने-अपने स्टार प्रचारकों की सूचियाँ जारी की है लेकिन ये सूचियाँ सिर्फ दिखावे के लिए रह गई है चुनाव कुछ बड़े चेहरों पर केन्द्रित हो कर रह गया है

हर पार्टी इस समय नकाब के अन्दर चाहे जैसी हो लेकिन दिखावटी चहरे और मुखौटे लगाने पर बराबर जोर देती रही। 2024 में उत्तर प्रदेश के चुनावों को ध्यान में रखते हुए एक बार फिर से इस दलों द्वारा जातीय समीकरणों को साधने के लिए अपने अपने चेहरों को साफ करने का प्रयास किया जा रहा है। इन दलों के ये ऐसे जातीय चेहरे जिनपर फिर से दांव लगाया जा रहा है। जिनको लेकर चुनाव में उतरने वाले हैं-

भाजपा के चेहरे



नरेन्द्र मोदी

जाति से बनिया, ओबीसी होने का दावा करते हैं। पहले सामान्य वर्ग में थे बाद में इनकी जाति ओबीसी में शामिल कर ली गई। आम लोक सभा चुनावों के दौरान इनको हिंदुत्व का ब्रांड एम्बेसडर के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। देश में भाजपा के चुनाव प्रचार की कमान स्वंय इस समय इन्ही के हाथों में है।



अमित शाह

जाति से बनिया, जैन धर्म से आते हैं लेकिन हिंदू धर्म के उद्धारक के रूप में हैं,देश में चुनाव प्रचार की कमान मोदी जी के साथ कंधे से कन्धा मिला कर संभाल रहें हैं



योगी आदित्य नाथ

उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री, वर्तमान में सबसे बड़े क्षत्रिय नेता के रूम में भाजपा के चुनाव प्रचार की कमान संभाले हुए हैं।



केशव प्रसाद मौर्य

मौर्य चहरे के रूप में सबसे बड़े चेहरे के रूप में केशव प्रसाद मौर्य हुआ करते थे लेकिन इस समय हासिये पर चल रहे हैं। चुनाव के दौरान कोई विशेष चर्चा नहीं है, पिचले चुनावों में जिस प्रकार का आभा मंडल निर्मित किया गया था इस बार वो गायब है



जयंत चौधरी

राष्ट्रीय लोकदल के प्रमुख जयंत चौधरी के भाजपा के साथ मिल जाने से इस बार के चुनावों में जाट चहरे के रूप में भाजपा को जाट वोटरों का फायदा मिल सकता है लेकिन इनकी भी भूमिका पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ जाट बाहुल्य क्षेत्रों तक ही सीमित रही है।



अनुप्रिया पटेल

भाजपा में चहरे के रूप में अनुप्रिया पटेल हैं, लेकिन ओबीसी हितों की हो रही हकमारी के चलते इस बार के चुनावों में इनका जलवा कम हो गया है। विपक्षी दलों द्वारा टिकट वितरण में कुर्मियों को अधिक संख्या में चुनाव मैदान में उतारे जाने के कारण कुर्मी नेता के रूप में इनका प्रभाव कम हुआ है



ओम प्रकाश राजभर

पूर्वांचल के बड़बोले नेता, मऊ जिले घोसी विधानसभा उप चुनाव में हार के कारण इनकी भी छवि में गिरावट आई है। अपने ही सजातीय मतदाओं में हसीं के पत्र बन गए हैं। घोसी लोकसभा क्षेत्र से दावेदारी कर रहे इनके पुत्र अरविंद राजभर को जिताने के लिए इनकी प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई है।

ये अलग बात है कि पीछे से बहुत सारे चेहरे हैं लेकिन मुखौटे यही हैं।

सपा के चेहरे



अखिलेश यादव

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव सपा के मुख्य चहरे हैं। समाजवादी पार्टी के घोषणा पत्र में एकमात्र चेहरा अखिलेश यादव का है। अखिलेश यादव एक बेहतर मुख्यमंत्री साबित हुए लेकिन एक बेहतर नेता नहीं। अभी तक इनके नेतृत्व में लड़े गए चुनावों में सपा कोई बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाई|



डिम्पल सिंह यादव

जाति से क्षत्रिय और सपा प्रमुख अखिलेश यादव की पत्नी होने के नाते सपा में अच्छा प्रभाव। पश्चिम में चुनावों में सक्रिय रूप से लगी हुई हैं।



शिवपाल यादव

शिवपाल यादव को समाजवादी पार्टी के रणनीतिकार माना जाता है,गतवर्ष घोसी उपचुनाव और मैनपुरी उपचुनाव के बाद उनके कद में इजाफा हुआ है। शिवपाल सिंह यादव के बेटे आदित्य यादव बदायूं सीट से चुनाव मैदान में हैं, समाजवादी पार्टी को जिताने और सपा के बेहतर प्रदर्शन की जिम्मेदारी उनके कन्धों पर है।



धर्मेन्द्र यादव

पूर्व सांसद धर्मेन्द्र यादव को संसद में सामाजिक न्याय की आवाज उठाने के लिए जाना जाता है लेकिन दो चुनावों में लगातार पराजय के कारण हासिये पर चल रहे हैं। पुर्वंचल की आजमगढ़ सीट से चुनाव मैदान में हैं जो सपा की सबसे सेफ सीटों में से एक है।



राम गोविन्द चौधरी

जाति से यादव राम गोविन्द चौधरी उत्तर प्रदेश के प्रख्यात समाजवादी नेता व 2017 से 2022 उत्तर प्रदेश विधानसभा में नेता विपक्ष की भूमिका निभा रहे हैं। वह उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव के नेतृत्व में पिछली समाजवादी पार्टी सरकार में बेसिक शिक्षा मंत्री तथा बाल विकास व पोषण मंत्री रह चुके हैं



नरेश उत्तम पटेल

जाति से कुर्मी । पिचले कई वर्षों से समाजवादी पार्टी प्रदेश अध्यक्ष रहे हैं । इस बार के चुनावों में फतेहपुर से लोकसभा के लिए उम्मीदवार है, जिसके कारण प्रदेश अध्यक्ष पद से हटा दिया गया है।



रामगोपाल यादव

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव, सपा की नीतियों के निर्माण में इनका प्रभाव दिखता है लेकिन पिचले कई चुनावों में सपा के घटिया प्रदर्शन के लिए इनको प्रमुख रूप से जिम्मेदार माना जाता है।

बसपा के चेहरे



मायावती

बहुजन समाज पार्टी सुप्रीमो मायावती आज की तारीख में देश की सबसे बड़ी दलित नेता हैं, लेकिन पिछले कई चुनावों से पार्टी के ख़राब प्रदर्शन के कारण हासिये पर हैं।



आनंद

बहुजन समाज पार्टी के वरिश और युवा नेता आनंद को वर्तमान लोकसभा चुनावों में लांच किया गया है। युवाओं द्वारा इन्हें विशेष रूप से पसंद किया जाता है



सतीश चंद्र मिश्रा

बसपा के तमाम दिग्गज नेताओं के पार्टी अलविदा कहने या फिर उन्हें निकाले जाने के बाद पार्टी के पास सबसे बड़े चेहरे के तौर पर खुद मायावती हैं। मायावती के बाद किसी नेता का नाम आता है तो वो बसपा के महासचिव और ब्राह्मण चेहरा सतीश चंद्र मिश्रा हैं।



अशोक सिद्धार्थ

मायायती के मजबूत सिपहसालारों में अशोक सिद्धार्थ का नाम आता है। राज्यसभा सदस्य रहे हैं और बसपा के संगठन में शुरू से रहे हैं। बसपा के बूथ प्रबंधन को मजबूत करने वाले नेताओं में गिना जाता है।

उत्तर प्रदेश में चौथे हासिये पर चल रही पार्टी कांग्रेस में इस चुनाव के दौरान ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कांग्रेस नवजीवन प्राप्त कर रही है,आम चुनाव के लिए हुए इंडिया गठबंधन में मिली सीटों पर कांग्रेस मजबूती के साथ लड़ रही है। हालाँकि सवर्ण तबके को ढोने वाली कांग्रेस ने अपना रुख पलट कर ओबीसी की तरफ कर दिया है, समाजवादी पारी के परम्परागत वोटर्स और राहुल गाँधी के जुझारू रवैये ने कांग्रेस में जान ला दी है।

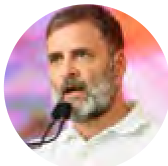
सोनिया गाँधी,राहुल गाँधी, प्रियंका गाँधी और मल्लिकार्जुन खडगे के नेतृत्व में कांग्रेस की हवा बदली है। उत्तर परदेश में चुनावों के लिए यही कांग्रेस के चहरे भी हैं।

कांग्रेस के चेहरे



सोनिया गांधी

जन्मजात क्रिचियन लेकिन भारतीय वर्ण व्यस्था में जाति का पता नहीं । लंबे समय तक कांग्रेस की अध्यक्ष रही। देश की आजादी के बाद से वह राष्ट्रीय पार्टी का नेतृत्व करने वाली पहली विदेशी महिला हैं। सोनिया गांधी सबसे लंबे समय तक कांग्रेस पार्टी की अध्यक्ष रहने का रिकॉर्ड बना चुकी हैं। वह 1998 से 2017 तक इस पद पर रहीं।



राहुल गांधी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य हैं 2019 में उन्हें भाजपा की स्मृति ईरानी के हाथों अमेठी में शिकस्त का सामना करना पड़ा लेकिन केरल के वायनाड से उन्हें जीत मिली। राहुल गांधी ने 3 जुलाई 2019 को लोकसभा चुनावों में पार्टी के खराब प्रदर्शन के बाद अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया |वर्तमान में कांग्रेस पार्टी के मुख्य चहरे हैं । उनके नेतृत्व में चलायी गई भारत जोड़ो यात्रा ने देश में चुनावी माहौल को रोचक बना दिया है उत्तर प्रदेश की रायबरेली सीट से लोकसभा के लिए दावेदारी कर रहें हैं।



प्रियंका गांधी

प्रियंका गांधी वाड्रा ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटी की महासचिव (Congress General Secretary) होने के साथ उत्तर प्रदेश की प्रभारी भी हैं। कांग्रेस के युवा पीढ़ी के तेज तर्रार नेताओं में सुमार । कांग्रेस की पारिवारिक सीटों रायबरेली और अमेठी की सीटों के लिए विशेष रूप से कैम्प किये हुए हैं ।



मल्लिकार्जुन खडगे

कर्नाटक में एक दलित जाति परिवार से आते हैं । वर्तमान में वे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। वह 9 बार के विधायक और 3 बार के सांसद हैं। साल 2020 में वह कर्नाटक से राज्यसभा के लिए निर्विरोध निर्वाचित हुए।

वो चेहरे, जो किसी भी दल के नहीं हो सके ये चेहरे इस तरह के हैं जो किसी पार्टी को प्रभावित करते हैं।



स्वामी प्रसाद मौर्य

राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी के अध्यक्ष स्वामी प्रसाद मौर्य देश में सामाजिक न्याय के प्रबल पैरोकार है, जब जब धार्मिक पाखंड की बात आती है तो अपने बयानों के कारण वे स्वतः ही चर्चा में आ जाते हैं। धार्मिक आडम्बरों को न मानने वाला एक बौद्धिक तबका इनका प्रबल समर्थक है।



असदुद्दीन ओवैसी

ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के प्रमुख और हैदराबाद से लोकसभा सांसद असदउद्दीन ओवैसी अपने तल्ख़ बयानों को लेकर हमेशा चर्चा में बने रहते है। ओवैसी मुसलमानों के मुद्दों पर खुलकर बोलते है।



पल्लवी पटेल

पल्लवी पटेल अपना दल (कमेरावादी) पार्टी की नेता हैं और वे समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार के रूप में सिराथू से उत्तर प्रदेश विधान सभा से विधायक है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुर्मी बाहुल्य क्षेत्रों में ठीक ठाक पकड़ है।



चंद्रशेखर आजाद रावण

चंद्रशेखर आजाद रावण कैराना से लोक सभा प्रत्याशी है, इनकी पहचान जुझारू बहुजन लीडर के रूप में बनी है, दलित उत्पीडन के मुद्दों पर चन्द्रसेखर खुलकर विरोध करते हैं।

रिटर्निंग आफिसर : यादव-मुस्लिम क्यों नहीं?

▪ **बसावन इंडिया डेस्क**

मतदाताओं के लिहाज से उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा प्रदेश है जो देश की राजनीति की दिशा और दशा तय करता है प्रदेश के 75 जिलों की 80 सीटों से यह तय होता है कि दिल्ली की सत्ता पर कौन बैठेगा? उत्तर प्रदेश की राजनीति पूरे देश की राजनीति को प्रभावित करती है यही कारण है कि संपूर्ण देश की निगाहें उत्तर प्रदेश के ऊपर लगी रहती है।

अब जबकि आम चुनाव शुरू हो चुका है, तो इस बार की मंडल आडिट में बसावन इंडिया ने सबसे ज्वलंत मुद्दे लोकसभा चुनाव से संबंधित विषय का मंडल आडिट करने का निर्णय लिया है। बसावन इंडिया ने उत्तर प्रदेश में चुनावों के दौरान नियुक्त किये गए रिटर्निंग आफिसर्स की गणना करने का निर्णय लिया है,

यह बात गौर करने वाली है कि उत्तर प्रदेश के 75 जिलों की 80 सीटों के लिए एक भी रिटर्निंग ऑफिसर यादव और मुस्लिम जातियों से नहीं है, जबकि उत्तर प्रदेश में 18 से 20 फ़ीसदी की जनसँख्या यादवों की है और प्रदेश में मुसलमानों की आबादी लगभग 20 फ़ीसदी है। इस प्रकार लगभग 38 से 40 फ़ीसदी जनसँख्या को सीधे नकारते हुए एक भी रिटर्निंग आफिसर इन जातियों से नहीं नियुक्त किया गया। ऐसा नहीं है कि यादव और मुसलमान ही सिर्फ दो जातियां हैं जिनसे कोई भी रिटर्निंग आफिसर्स की नियुक्ति नहीं की गई है, प्रदेश की कई और भी अन्य जातियां हैं जिनके रिटर्निंग आफिसर्स नहीं बनाये गए है। चूँकि यादव और मुस्लिम प्रदेश की दो बड़ी जातियां है इसलिए इसपर लोगों का ध्यान अधिक रहता है।

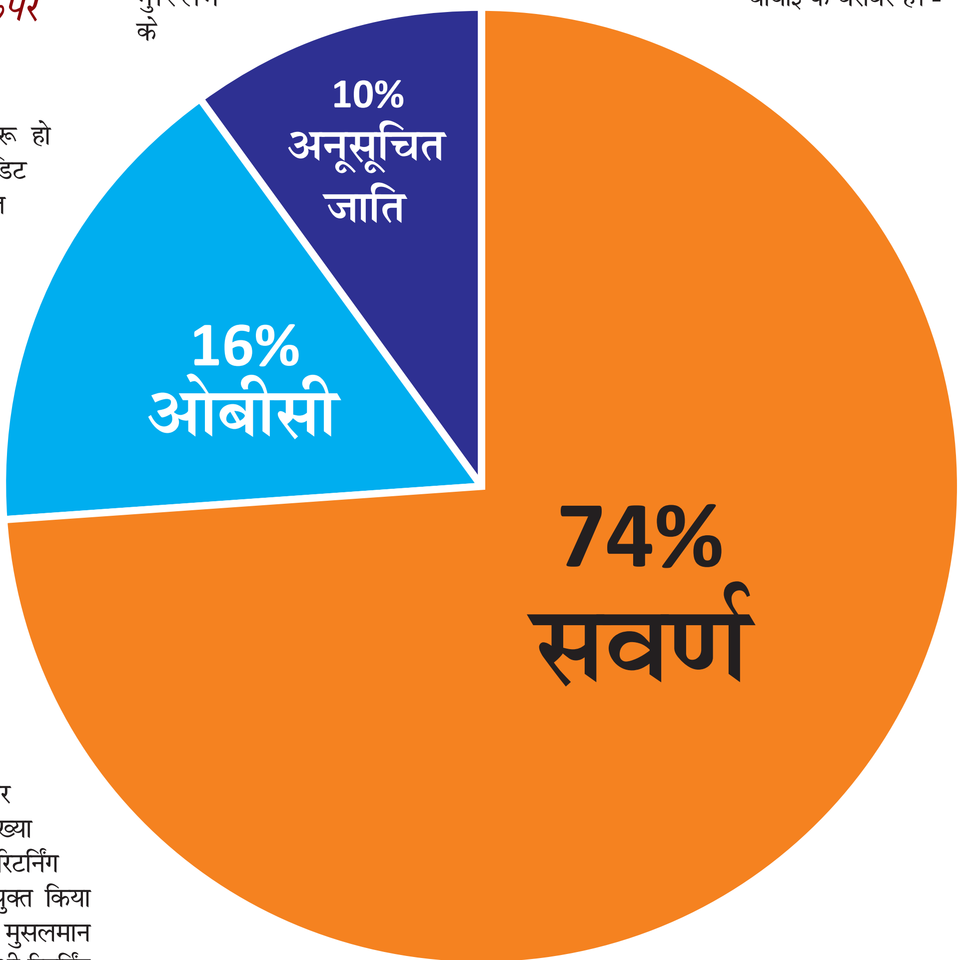
प्रदेश का यह पहला चुनाव नहीं है जिसमें कि अधिकारियों की तैनाती इस प्रकार से की गई हो, इससे पूर्व 2022 में हुए उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनावों के दौरान भी यादव और मुस्लिम को रिटर्निंग आफिसर नहीं बनाया गया था। उस समय भी अधिकारियों के बीच इस मुद्दे को लेकर बहुत कानाफूसी हुई लेकिन राजनीतिक गलियारे में इसका संज्ञान नहीं लिया गया। कांग्रेस सामाजिक न्याय और सबकी भागीदारी की बात तो करती है लेकिन कांग्रेस ने चुनाव आयोग तक यह जानकारी नहीं पहुंचाई की रिटर्निंग आफिसर में सबकी भागीदारी क्यों नहीं है?

यादव और मुस्लिम के आलावा ओबीसी जातियों के रिटर्निंग आफिसर की बात की जाय तो 06 कुर्मी, एक जाट, एक गुर्जर, एक साहू, एक दक्षिण भारतीय ओबीसी सहित कुल 12 ओबीसी अधिकारी है।

अनुसूचित जातियों के रिटर्निंग आफिसर्स की बात की जाय तो उनकी संख्या 08 है।

इस समय प्रदेश में रिटर्निंग ऑफिसर की बात की जाए तो सबसे अधिक संख्या सवर्णों की है। जिसमें क्षत्रिय, ब्राह्मण, बनिया, कायस्थ और भूमिहार वर्ग से हैं। सवर्ण रिटर्निंग आफिसर की संख्या 57 है। जिसमे सबसे अधिक रिटर्निंग ऑफिसर क्षत्रिय और ब्राम्हण जातियों से हैं। अकेले ब्राह्मण अधिकारियों की संख्या 18 से अधिक है। 03 अधिकारी बनिया वर्ग से हैं, शेष सवर्ण जातियां कायस्थ और भूमिहार से दो-दो रिटर्निंग ऑफिसर है।

इस प्रकार देखा जाए तो 15% आबादी के 74% अधिकारी हैं, शेष 85% आबादी से 26% अधिकारी हैं। मतलब एक चौथाई के बराबर है। ▪



जातीय जनगणना रिपोर्ट
सांसद आदर्श ग्राम जयापुर, वाराणसी

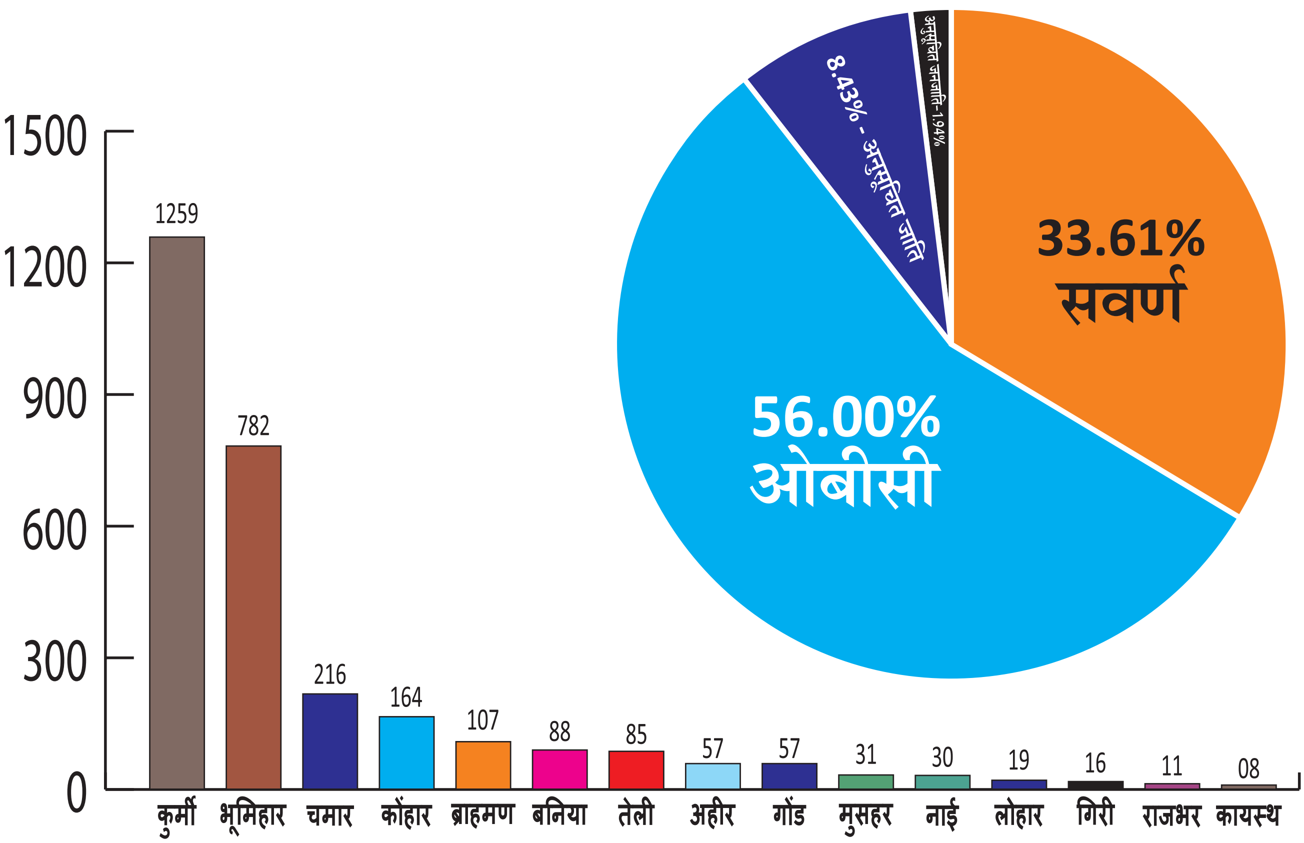
▪ **बसावन इंडिया डेस्क**

बसावन इंडिया के प्रवेशांक में आजमगढ़ जिले के भरमा-डढ़िया ग्राम सभा की जातीय जनगणना का प्रकाशन किया था|बसावन इंडिया अपने प्रवेशांक से लेकर लगातार जाति जनगणना के लिए एक गाँव की जनसँख्या का प्रकाशन कर रहा है। बसावन इंडिया द्वारा अबतक 15 गांवों की जाति जनगणना का प्रकाशन किया जा चुका है। जातीय जनगणना के लिए हम उस गांव की नवीनतम निर्वाचन सूची को आधार बनाते है, उसी गांव के किसी व्यक्ति द्वारा जातियों को चिन्हित कर जातिवार आंकड़ों को प्रस्तुत करते हैं।

यदि आप अपने गांव की जनगणना रिपोर्ट का प्रकाशन चाहते हैं तो नवीनतम मतदाता सूची को आधार बनाकर बसावन इण्डिया को मेल कीजिए। बसावन इण्डिया की संपादकीय टीम यदि आपके गांव की रिपोर्ट का चयन करती है तो सिटिजन जर्नलिस्ट के रूप में आपको क्रेडिट देते हुए आपके फोटो के साथ आपका नाम मैगजीन में प्रकशित किया जाएगा। जातीय जनगणना की इस कड़ी में बसावन इंडिया की संपादकीय टीम ने जयापुर गांव का चयन किया है। जिसकी रिपोर्ट संपादक ने स्वंय जयापुर गांव में जा कर चंद्र शेखर और शमशेर सिंह यादव की मदद से ग्रामीणों से पूछकर तैयार की है।

जयापुर,उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले का सीमावर्ती गाँव है जिसकी दूरी वाराणसी और मिर्जापुर जिला मुख्यालय से लगभग सामान है। 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सांसद आदर्श गाँव योजना के तहत गोद लिए जाने के कारण यह गाँव सुर्ख़ियों में आ गया । गाँव में सरकारी अधिकारियों की आवक बढ़ गई, सडकों की स्थिति में सुधार हुआ, लोगों की सुविधा के लिए गाँव में दो बैंक अपनी सेवाएं देने लगे। नासड़ा, चंदापुर, जक्खनी,बहादुरपुर,पंचई और गोंट्वा इसके पड़ोसी गांव हैं।

जयापुर एक पिछड़ा बाहुल्य गाँव है। त्रिस्तरीय ग्राम पंचायत चुनावों की मतदाता सूची में जयापुर गांव में कुल 2930 मतदाता हैं। गांव में सवर्ण जातियों की तादात भी ठीक ठाक है,गाँव में भूमिहार, ब्राह्मण,बनिया और कायस्थ जाति के 985 लोग रहते हैं। अन्य पिछाड़ी जातियों में कुर्मी, कोहांर, लोहार,अहीर, तेली, भर, नाई और गोसाईं (ओबीसी ब्राहमण) की कुल संख्या 1641 है। पिछड़ों में कुर्मियों की संख्या ज्यादा 1259 है। दलित जातियों में चमार 216 और मुसहर 31 हैं। अनुसूचित जनजाति में गोंड (भुजा) जाति के लोग हैं, जिनकी संख्या 57 है। मुसहरों के निवास के लिए कुछ स्वंयसेवी संगठनों द्वारा गाँव में अटल नगर का निर्माण किया हैं। इस गाँव में कोइरी, गड़ेरिया, धोबी, पासी, खटीक और मुसलमान जाति का कोई भी परिवार नहीं है। ▪



सांसद आदर्श ग्राम जयापुर, वाराणसी (उ. प्र.)



सपा की रैली

सपा के पीडीए में यादव ?

▪ बसावन इंडिया डेस्क

उत्तर प्रदेश में भाजपा और सपा के बीच कई लोकसभा सीटों पर कांटे की टक्कर है। इस लोकसभा चुनाव में भाजपा ने अपने सवर्ण वोटरों को साधा है तो, सपा ने अपने नारे के मुताबिक पीडीए को साधा है।

यूपी में भाजपा अपने ब्राह्मण, क्षत्रिय और और ओबीसी में कुर्मी को साधने की कोशिश की है, भाजपा ने सबसे ज्यादा टिकट ब्राह्मणों-ठाकुरों को दिए हैं जबकि सपा ने कुर्मी और मौर्य-शाक्य-सैनी-कुशवाहा जाति के प्रत्याशियों की संख्या सबसे अधिक है ।

सपा के जातिवार प्रत्याशी

लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने पीडीए के आधार पर अबकी सभी जातियों को उनकी संख्या के आधार पर टिकट का वितरण किया है। समाजवादी पार्टी ने इंडिया गठबंधन में आई अपने हिस्से की 62 सीटों में से 09 सवर्णों को टिकट दिया है जिनमे ब्राहमण, क्षत्रिय, बनिया और भूमिहार हैं। समाजवादी पार्टी ने एक जाति के रूप में सबसे अधिक उम्मीदवार कुर्मी को बनाया है इस चुनाव में सपा की और से 10 कुर्मी चुनाव लड़ रहे हैं जबकि अनुसूचित जातियों में सबसे अधिक पासी है जिनकी संख्या 7 है। समाजवादी पार्टी की पुरानी सोशल इंजीनियरिंग में यही उसका आधारभूत वोटर हुआ करता था। यादव, मुस्लिम, निषाद, पासी और ओबीसी और अनुसूचित जाति की दूसरी जातियों के सहारे आसानी से चुनाव जीत जाती थी।

सपा के जातिवार प्रत्याशी

जाति	2024
कुर्मी-पटेल	10
पासी	7
कुशवाहा-शाक्य-सैनी	6
जाटव	6
निषाद	5
यादव	5
मुस्लिम	4
ब्राह्मण	4
ठाकुर	2
सवर्ण वैश्य	2
खत्री	2
जाट	2
वाल्मीकि	1
गुर्जर	1
राजभर	1
भूमिहार	1
पाल	1
लोधी	1
खरवार	1



डॉ. लाल रत्नाकर
सामाजिक एवं राजनैतिक चिंतक

"लोकतंत्र में चुनाव लड़ने की आजादी आमतौर पर भारत के सभी नागरिकों को समान रूप से है। उत्तर प्रदेश की राजनीति के सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से देखा जाए तो यह समझ में आता है की किन क्षेत्रों में किन जातियों के सामाजिक वर्चस्व के चलते राजनीतिक प्रतिनिधित्व रहा है। दूसरी तरफ धार्मिक वर्चस्व को देखा जाए तो प्रदेश में आजादी के बाद से भारत की संसद में मुस्लिम के पर्सेंट भी ठीक रहता था लेकिन उनका परसेंट भी इस बार काम कर दिया गया है विशेष करके जो राजनीति के भेंट चढ़ा वह उत्तर प्रदेश का यादव। ज्ञातव्य है कि 2024 लोकसभा में 80 सांसद की सीट वाले प्रत्याशियों में उत्तर प्रदेश का वृहद यादव समाज से सैफई परिवार के पांच सदस्यों के अलावा एक भी सीट पर समाजवादी पार्टी ने चुनाव के लिए प्रत्याशी नहीं बनाया है
जबकि भाजपा ने आजमगढ़ से निरहुआ को टिकट दिया है। वही बहुजन समाज पार्टी ने जौनपुर से श्री श्याम सिंह यादव को एवं मैनपुरी से बसपा के श्री शिव प्रसाद यादव को कांग्रेस ने कोई भी प्रत्याशी इस चुनाव में नहीं लड़ा रहा है। क्योंकि आने वाले चुनाव में बीजेपी को हराना है इसलिए लोग किसी राजनीतिक प्रकरण को नहीं उठा रहे हैं।"

समाजवादी पार्टी के लिए को झंडा और डंडा लेकर क्यों लड़े?

आज हमने जाना और समझा कि समाजवादी पार्टी सैफई प्राइवेट लिमिटेड के रूप में काम कर रही है क्योंकि जिस व्यक्ति ने समाजवादी पार्टी के 2019 के टिकट पर मिर्जापुर में लोकसभा के इलेक्शन में चुनाव लड़ने की तैयारी की और पार्टी ने उसे टिकट भी दिया लेकिन भाजपा के मछली शहर के सांसद जिसका टिकट बीजेपी ने काट दिया था उसे मिर्जापुर से सपा ने टिकट से दिया गया लेकिन फिर भी वह व्यक्ति सपा से नाराज नहीं हुआ और 5 साल समाजवाद का झंडा और डंडा बुलंद करता रहा पार्टी छोडकर किसी अन्य पार्टी में नहीं गया लेकिन जब 2024 में एक बार फिर समाजवादी पार्टी ने उसे टिकट दिया और 2 महीने प्रचार करने के बाद जब पर्चा भरने का समय आया ऐन वक्त पर उस व्यक्ति का टिकट काटकर भदोही से भाजपा के सांसद रमेश चंद बिंद को टिकट दे दिया गया जिसका टिकट भाजपा ने काट दिया था ।उस रमेश चंद बिंद हजारों सपा के लोगो को फर्जी मुकदमे लगा कर जेल में भेजने का काम किया उसे भदोही जनपद मे बीजेपी ने टिकट नहीं दिया तो सपा ने मिर्जापुर से राजेंद्र एस बिंद का टिकट काट कर प्रत्याशी बना दिया। ऐसे ही पिछड़े दलित सांसद जो दस साल से भाजपा के तलवे चाटकर संविधान और मंडल कमीशन को समाप्त करने का काम किया है। इनके अंदर संविधान और मंडल कमीशन से तनिक भी प्रेम होता तो भाजपा के सांसद/विधायक की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया होता और सरकार दस साल की बजाय एक साल में सरकार गिरा दिया होता। ऐसे भाजपा में काम करने वाले पिछड़े दलित सांसद/विधायक को संविधान और मंडल कमीशन का विरोधी नहीं तो क्या है? क्या ये संविधान और मंडल कमीशन को समाप्त करने के दोषी नहीं है? तो कैसे दोषी नहीं है?सवाल तो बनता ही है। जितने पिछड़े दलितो मुसलमानों के निर्दोष लोगों के साथ अन्याय अत्याचार हत्या शोषण और उनके बहन बेटियो का बलात्कार करके हत्या की गई क्या इन सभी के लिए ये पिछड़े दलितो के भाजपाई विधायक सांसद दोषी कैसे नहीं है? आखिर क्यों और कैसा समाजवाद?

(भदोहीं से भड़का हुआ समाजवादी)

सैफई परिवार के अतिरिक्त किसी यादव को नहीं मिला टिकट -

समाजवादी पार्टी ने लोकसभा चुनाव में अपने टिकट वितरण का आधार पीडीए को बनाया है। अखिलेश यादव 2024 के चुनाव को सपा ने चुनौती के तौर पर लिया है वो किसी भी कीमत पर चुनाव को जीतना उनकी प्राथमिकताओं में है, अपने परम्परागत वोटरों यादव और मुस्लिम पर विश्वास जताते हुए सपा ने लोकसभा चुनाव में पहली बार परिवार के बाहर के किसी यादव को टिकट नहीं दिया है। यानी जिन पांच यादवों को मैदान में उतारा है, वे सभी सैफई परिवार के ही सदस्य हैं। पूर्व में समाजवादी पार्टी ने कभी भी येसा नहीं किया था कि परिवार के आलावा किसी अन्य यादव को टिकट न दिया हो। अखिलेश के इस प्रयोग की परीक्षा होगी।सपा 62 सीटों पर चुनाव लड़ रहीहै। मैनपुरी से डिंपल, कन्नौज से अखिलेश यादव, आजमगढ़ में धर्मेंद्र यादव, फिरोजाबाद से अक्षय यादव, बदायूं से आदित्य यादव मैदान में हैं।

2014 में 13 तो 2019 में 11 यादवों को मिला था टिकट

वर्ष 1999 में पहली बार मुलायम सिंह सांसद बने थे। वह सात बार सांसद रहे, जबकि अखिलेश ने वर्ष 2000 में लोकसभा के उपचुनाव से सियासी सफर शुरू किया। फ्लैश बैक में जाएं तो वर्ष 2014 में सपा ने 13 यादवों को टिकट दिया था, जिनमें मुलायम सहित पांच लोग विजेता रहे। इसी तरह 2019 में 11 यादवों को टिकट मिला था, जिसमें पांच सीटें मिलीं। मुलायम और अखिलेश के अलावा अन्य हार गए थे। ▪

सामान्य सीटों पर अनुसूचित जाति के प्रत्याशी



▪ बसावन इंडिया डेस्क

पीडीए की बात करने वाली समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश की दो सामान्य सीटों से आरक्षित वर्ग उम्मीदवारों को चुनाव में उतारकर बड़ा आईना दिखने का प्रयास किया है फैजाबाद और मेरठ लोकसभा की ये दोनों सीटें प्रतीकात्मक भी हैं जहाँ एक जगह राम जन्मभूमि स्थल है वहां से भाजपा ने लल्लू सिंह (दो बार के सांसद) को उतारा है। मेरठ लोकसभा पर रामायण सीरियल के अरुण गोविल चुनाव लड़ रहे हैं।इनके सामने सुनीता वर्मा चुनाव लड़ रही हैं, वहीं ऐसा पहली बार हो रहा है कि किसी बड़े राजनीतिक दल में दो अनारक्षित सीटों से आरक्षित वर्ग के प्रत्याशियों को चुनाव में खड़ा किया है, पूर्व में मान्यवर कांशीराम इटावा लोक सभा की अनारक्षित सीट से चुनाव जीत कर सदन पहुंचे थे। उत्तर प्रदेश में आरक्षित सीटों को छोड़कर किसी भी सामान्य सीट पर दलित समाज का कोई भी प्रत्याशी चुनाव मैदान में नहीं है।



मेरठ लोकसभा से सुनीता वर्मा

समाजवादी पार्टी ने मेरठ सीट पर जाटव समाज से आने वाली सुनीता वर्मा को चुनाव मैदान में उतारा है। मेरठ की पूर्व मेयर सुनीता वर्मा मेरठ-हापुड़ लोकसभा सीट से पूर्व विधायक योगेश वर्मा की पत्नी हैं। 2017 में वे भाजपा प्रत्याशी को हरा कर मेरठ की मेयर बनी। यूपी में विपक्षी सरकार में तमाम परेशानियों के बावजूद उन्होंने अपना मेयर का कार्यकाल सफलता पूर्वक पूरा किया।



फैजाबाद लोकसभा से अवधेश प्रसाद

देश की सबसे चर्चित फैजाबाद लोकसभा सीट जहाँ राम मंदिर स्थित है उस सीट से सपा ने अपने एक पुराने दलित नेता अवधेश प्रसाद को चुनाव मैदान में खड़ा किया है। समाजवादी पार्टी की स्थापना से ही जुड़े रहे अवधेश प्रसाद पासी जाति से हैं। अयोध्या जनपद की सोहावल और मिल्कीपुर विधानसभा से जीत कर यह 9 बार विधानसभा विधानसभा में पहुंचने में कामयाब रहे। फैजाबाद लोकसभा सीट से अवधेश प्रसाद का कड़ा मुकाबला भाजपा के लल्लू सिंह से है, जो 17 वीं लोकसभा के लिए संसद में फैजाबाद का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। ▪



राम लौटन निषाद
सामाजिक एवं राजनैतिक चिंतक

" मायावती भी सुरक्षित सीट से चुनाव लड़ती रही है। सामान्य सीट पर चुनाव लड़कर संसद तक पहुंचाने वालों में अब तक मान्यवर कांशीराम के अलावा किसी भी दलित नेता का नाम नहीं है। काशीराम 1991 में इटावा से सांसद चुने गए थे। समाजवादी पार्टी के नेता राम लौटन निषाद ने इसे भारत में लोकतांत्रिक इतिहास का एक बड़ा कदम मानते हैं उनका मानना है कि जिस तरह मुलायम सिंह काशीराम के साथ आने पर नारा लगा था कि मिले मुलायम-काशीराम हवा हो गए जय श्री राम"। वही 2024 में अब सामान्य सीटों पर दलितों को मैदान में उतरकर सपा भाजपा के हवा हवाई जुमलेबाजी को फिर से उखाड़ फेंकेगी और PDA को स्थापित करेगी उन्होंने कहा कि बीजेपी के शासन में कई जगह एससी /एसटी /ओबीसी के अधिकारों की हकमारी करके सवर्ण लोगों को देने की कोशिश की गई लेकिन सफल के चुनाव में सामान्य सीटों दे रही है भारतीयों में भी आरक्षित वर्ग के लोगों को सामान्य सीट पर जाने में खड़ी की गई बाधाओं को खत्म करने का काम करेगी "

2024 के चुनाव में पुरानी पेंशन कहाँ?



पुरानी पेंशन की माँग करते हुए



देश में आम चुनाव चल रहा है सभी राजनीतिक दलों ने अपने अपने घोषणा पत्र जारी कर दिए हैं समाजवादी पार्टी को छोड़कर किसी भी प्रमुख राजनीतिक दल ने पेंशन को राष्ट्रीय मुद्दा नहीं बनाया है। गरीबों को लगभग 8 हज़ार देने की बात कर रही कांग्रेस पेंशन के मुद्दे पर लगभग चुप है।
देश का सरकारी कर्मचारी जो की किसी भी देश व प्रदेश की धुरी होता है। वह 01 जनवरी 2004 से अपनी पुरानी पेंशन के बंद होने से अपने सेवा निवृत्ति के बाद के बुढ़ापे वाले जीवन को लेकर सशंकित है क्योंकि जो एन.पी.एस अंशदायी नई पेंशन उसे दी गई है। वह शेयर बाजार आधारित होने से अनिश्चितता से भरी हुई है इसमें एन.पी.एस में जमा की गई गारंटी है परंतु वापसी की निश्चित गारंटी नहीं है, जबकि ओ.पी.एस में सेवानिवृत्ति के पश्चात अंतिम वेतन की 50% वेतन और महंगाई भत्ते के साथ पेंशन की गारंटी थी, जो एन.पी.एस में नहीं है, अपने जीवन के महत्वपूर्ण समय को देश की सेवा में लगा देने वाला कर्मचारी एन.पी.एस से मिलने वाली 500, 1000, 2000, 4000 पेंशन को लेकर आशंकित है इसके लिए वह समय समय पर अपनी रैली धरना प्रदर्शन ट्विटर हैस टैग अभियान एवं जन जागरण अभियान के माध्यम से सरकारी पुरानी पेंशन बहाली की मांग करता रहा है।

विगत वर्ष 2023 अक्टूबर माह में एम.एन.ओ.पी.एस के अगुवाई में पूरे देश के कर्मचारी दिल्ली के रामलीला मैदान में पुरानी पेंशन बाहरी के लिए लामबंद हुए जो कि कर्मचारियों के इतिहास में सबसे बड़ी रैली थी मीडिया रिपोर्ट् के अनुसार रैली में लगभग 20 लाख कर्मचारियों ने भाग लिया।

1 अक्टूबर 2023 की ऐतिहासिक रैली को विभिन्न कर्मचारी संगठनों व सामाजिक हस्तियों ने भी समर्थन किया रैली में कर्मचारियों ने अपने पुराने मुद्दे के समर्थन में वोट का ओ.पी.एस अभियान चलाने व सफल बनाने की शपथ ली। अपने मुद्दे की ओर एकजुट होता देख राज्य सरकारों एवं विभिन्न दलों में इस मुद्दे को गंभीरता से लिया। इसका उदाहरण सरकार में संसद में पेंशन सुधार हेतु समिति बनाने की घोषणा की जो कि सरकार व पार्टी तथा उसके प्रवक्ता ओ.पी.एस को रेवड़ी बताते थकते नहीं थे आज वही सुधार के लिए कमेटी बना रहे हैं, एवं उसकी राज्य सरकारें हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, गुजरात पेंशन बहाली की ओर कदम बढ़ा रही है। उत्तर प्रदेश सरकार भी इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने को विवश हुई। सिक्किम सरकार ने तो सितंबर 2023 में अपने राज्य में पुरानी पेंशन बहाली की घोषणा कर दी। महाराष्ट्र सरकार लगातार पुरानी पेंशन बहाली की दिशा में आगे बढ़ रही है। 1 मार्च 2024 को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने विधानसभा में घोषणा की सेवानिवृत्ति कर्मचारी एन.पी.एस से अंतिम वेतन का 50% महंगाई भत्ते के साथ पेंशन महाराष्ट्र सरकार देगी। आंध्र प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री पहले ही घोषणा कर चुके हैं कि हमारी सरकारी एन.पी.एस से निवृत कर्मचारियों को अंतिम वेतन का 33% महंगाई भत्ते के साथ पेंशन दी जाएगी। कर्नाटक सरकार पुरानी पेंशन बहाली के रास्ते की ओर अग्रसर है। वर्ष 2018 के चुनाव में, वर्ष 2022 व वर्ष 2023 के विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में कर्मचारियों ने अपने मुद्दे के प्रति एकजुट होकर मतदान किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि कई राज्यों में सरकार बदली और उन्होंने पुरानी पेंशन बहाल की। जिसमें राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखंड, पंजाब एवं हिमाचल प्रदेश की सरकारी पुरानी पेंशन बहाल की। आज कुछ राज्यों में सरकारें बदल भी गई है परंतु पुरानी पेंशन के प्रति कर्मचारी की एकजुटता के कारण एवं पुरानी पेंशन बहाली मुद्दे के साथ लामबंद कर्मचारियों के दबाव के कारण कोई भी सरकार ओ.पी.एस से छेड़छाड़ करने का जोखिम नहीं उठाना चाहती है। पूरे देश में पेंशन बहाली की अलख जगाने वाले विजय कुमार बंधु के नेतृत्व में देश-विदेश का कर्मचारी अपने मुद्दे के हल होने तक मजबूती से खड़ा है इसके लिए अनेकों उदाहरण है जिसमें उनके आह्वान पत्र से पूरे देश के लाखों लाख कर्मचारी विभागों, संघों एवं राज्यों की सीमाओं को लाँघ कर एम.एन.ओ.पी.एस के कार्यक्रम में पूरी तरह से प्रतिभाग करते हैं। वर्ष 2023 में विधानसभा चुनाव की भर्ती 2024 के लोकसभा चुनाव में ओ.पी.एस एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहेगा और देश का कर्मचारी अपने मुद्दे के साथ हैं। ▪



डॉ. आशाराम यादव
मो.न.- 9457000083



▪ बसावन इंडिया डेस्क

खतरे में लोकतंत्र?

▪ बसावन इंडिया डेस्क

अभी हाल में गोथेनबर्ग यूनिवर्सिटी स्वीडेन के वी डेम संस्थान ने वैश्विक लोकतांत्रिक रिपोर्ट-2024 जारी की है। यह रिपोर्ट दुनिया की एक भयावह तस्वीर प्रस्तुत करती है। इस रिपोर्ट को देखने से यह पता चलता है कि क्या दुनिया उलटी दिशा में चल रही है। यह हमें सोचने पर विवश करती है कि दुनिया में जनता का शासन अर्थात लोकतंत्र खतरे में है? यह रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2023 में दुनिया में औसत व्यक्ति को प्राप्त लोकतांत्रिक अधिकारों का स्तर वर्ष 1985 के स्तर तक नीचे आ गया है। जबकि अपने देश यानी भारत में यह 1998 के स्तर पर आ गया है। रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2009 से वर्ष 2023 तक लगभग 15 वर्षों में निरंकुश देशों में रहने वाली दुनिया की आबादी का हिस्सा लोकतांत्रिक देशों में रहने वाले हिस्से से अधिक हो गया है। पूर्वी यूरोप, दक्षिण एवं मध्य एशिया में लोकतांत्रिक मूल्यों में गिरावट बहुत अधिक है। लैटिन अमेरिका और कैरेबियन देशों में वैश्विक प्रवृत्ति के विपरीत प्रवृत्ति हैं। यहां लोकतंत्र का स्तर बढ़ा है। यहां के बड़े देश छोटे देशों की तुलना में अधिक लोकतांत्रिक हो रहे हैं।

दो भागों में बंटती जा रही दुनिया

रिपोर्ट बताती है कि दुनिया के लगभग आधे देशों में लोकतांत्रिक और आधे में निरंकुश शासन है। आंकड़ों में कहें तो दुनिया में 91 लोकतांत्रिक और 88 निरंकुश शासन है। वर्तमान में दुनिया की 71 प्रतिशत आबादी (5.7 अरब लोग) निरंकुश शासन में रहती है। जबकि दस साल पूर्व 48 प्रतिशत आबादी निरंकुश शासन के अंतर्गत थी रिपोर्ट यह भी बताती है कि पूरी दुनिया में सर्वाधिक लोग चुनाव अपनाने वाले निरंकुश शासन में रहते हैं। इन देशों में चुनाव तो संपन्न होता है, लेकिन वह केवल दुनिया को दिखाने के लिए होता है और उसके परिणाम सत्ता पक्ष के अनुकूल होते हैं। दुनिया की आबादी का 44 प्रतिशत (करीब 3.5 अरब लोग) इस तरह के चुनावी निरंकुश शासन के अधीन हैं। जबकि दुनिया की मात्र 29 प्रतिशत आबादी (करीब 2.3 अरब लोग) उदारवादी और चुनावी लोकतंत्र में हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, इज़राइल लगभग 50 वर्षों में पहली बार उदार लोकतंत्र की श्रेणी से बाहर हो गया है।

35 देशों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला बढ़ा

लोकतंत्र के लगभग सभी घटक दस साल पूर्व की तुलना में अधिकांश देशों में बेहतर होने की तुलना में बदतर होते जा रहे हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, लोकतंत्र का बुरी तरह से प्रभावित होनेवाला प्रमुख घटक बन गया है। वर्ष 2023 में 35 देशों में इसकी स्थिति खराब हो गई है। लोगों से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छिनी जा रही है। निष्पक्ष चुनाव, प्रभावित होने वाले घटकों में दूसरा प्रमुख घटक है। कुल 23 देशों में इसकी स्थिति खराब हो रही है, जबकि 12 देशों में सुधार हो रहा है। लोकतंत्र की यह मुख्य संस्था अपेक्षाकृत अप्रभावित हुआ करती थी। लेकिन वर्तमान में इसके ऊपर सत्ता का नियंत्रण बढ़ता जा रहा है। संगठन बनाने की स्वतंत्रता और नागरिक समाज, तीसरा सबसे प्रभावित घटक है। दुनिया के 20 देश इस अधिकार से जनता

को रोक रहे हैं जबकि केवल तीन देश इस दिशा में बेहतर वृद्धि कर रहे हैं।

दुनिया भर में कुल 60 देश निरंकुश सत्ता या लोकतांत्रिक सत्ता परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं। इसमें निरंकुशता की लहर विशेष तौर पर उल्लेखनीय है। कुल 42 देशों में निरंकुशता जारी है, जहां 2.8 अरब (35 प्रतिशत) लोगों की आबादी रहती है। निरंकुश देशों में रहने वाली आबादी का लगभग आधा (18 प्रतिशत) हिस्सा भारत में है।

19 देशों में लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी, इंडिया भी शामिल

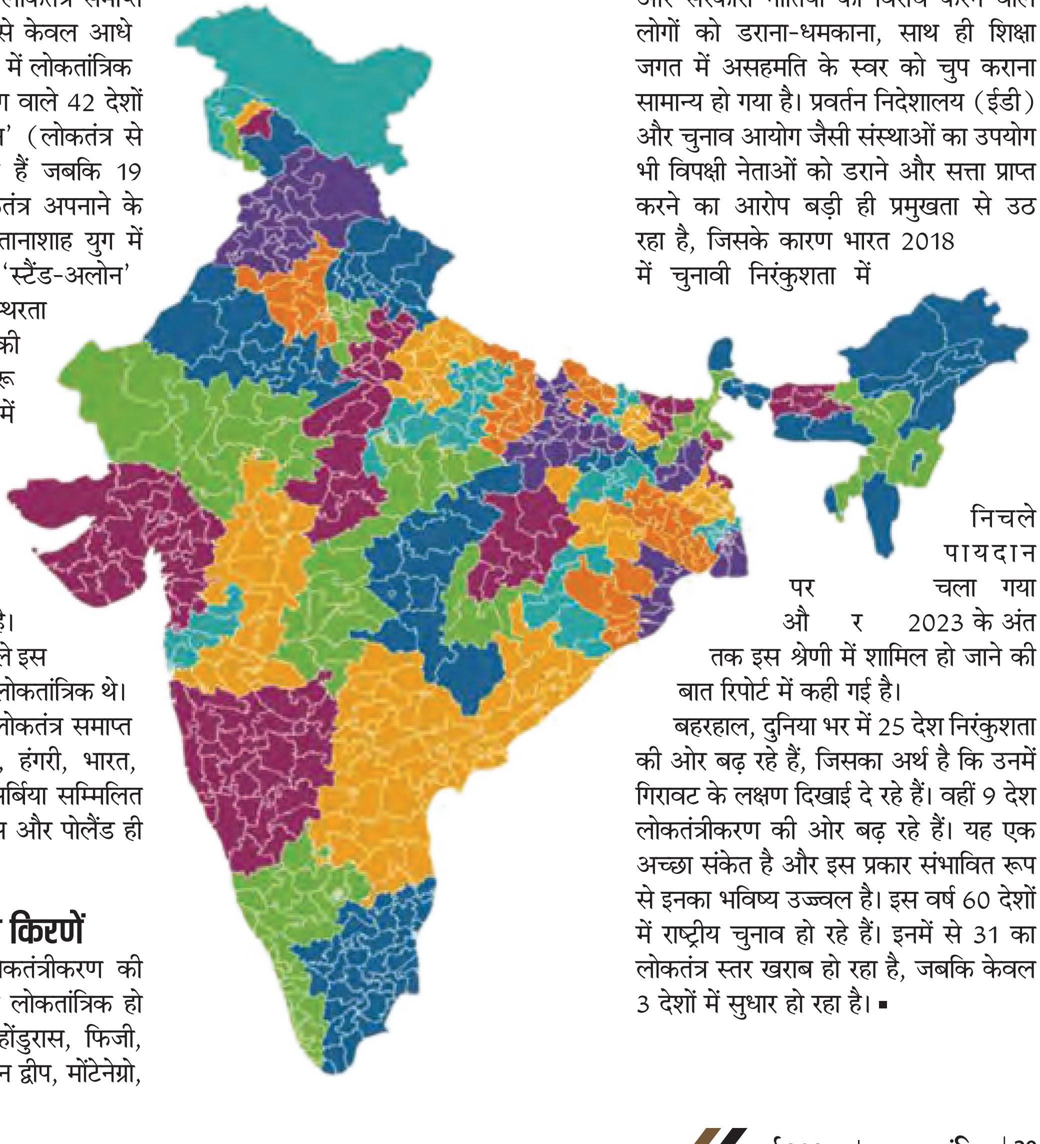
पूरी दुनिया में निरंकुशता कुछ देशों में या तो पूरी तरह से बढ़ चुकी है या बढ़ने की प्रक्रिया में है। यह स्थिति भविष्य की भयावहता की ओर संकेत कर रही है। कुल 42 देश वर्तमान में निरंकुशीकरण के दौर से गुजर रहे हैं। इन देशों में से 28 अपने निरंकुशीकरण के प्रारंभ में लोकतांत्रिक थे। अर्थात पहले वहां लोकतंत्र मौजूद था, लेकिन अब वहां लोकतंत्र समाप्त हो रहा है। इन 28 देशों में से केवल आधे (लगभग 15) ही वर्ष 2023 में लोकतांत्रिक बने रहें। जबकि निरंकुशीकरण वाले 42 देशों में से 23 देश 'स्टैंड-अलोन' (लोकतंत्र से अलग होने) की प्रक्रिया में हैं जबकि 19 देश 'बेल-टर्न' (यानी लोकतंत्र अपनाने के कुछ समय बाद ही वापस तानाशाह युग में लौटने) की प्रक्रिया में हैं। 'स्टैंड-अलोन' निरंकुशीकरण में सापेक्ष स्थिरता की अवधि के बाद गिरावट की प्रक्रिया स्वतंत्र रूप से शुरू होती है, और 'बेल-टर्न' में निरंकुशता लोकतंत्र के कुछ ही समय बाद होती है, और लोकतंत्रीकरण की अवधि से जुड़ी होती है। वहां लोकतंत्रीकरण के बाद निरंकुशीकरण होता है। निरंकुशता की शुरुआत से पहले इस समूह के दस में से आठ देश लोकतांत्रिक थे। इन आठ में से छह देशों में लोकतंत्र समाप्त हो रहा है, जिनमें कोमोरोस, हंगरी, भारत, मारीशस, निकारागुआ और सर्बिया सम्मिलित हैं। वहीं 2023 में केवल ग्रीस और पोलैंड ही लोकतंत्र बने रहेंगे।

उम्मीद की धुंधली किरणें

दुनिया के कुछ देश लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया में है या पूरी तरह से लोकतांत्रिक हो गए हैं। गाम्बिया, सेशेल्स, होंडुरास, फिजी, डोमिनिकन गणराज्य, सोलोमन द्वीप, मोंटेनेग्रो, कोसोवो और तिमोर-लेस्ते में से 7 'स्टैंड अलोन' लोकतंत्रवादी देश निरंकुशता से दूर हो गए हैं। 'स्टैंड अलोन' लोकतंत्रीकरण में सापेक्ष स्थिरता की अवधि के बाद उन्नयन की प्रक्रिया स्वतंत्र रूप से शुरू होती है। मालदीव, जाम्बिया, बेनिन, बोलीविया, ब्राज़ील, उत्तरी मैसेडोनिया, थाईलैंड और ट्यूनीशिया 'यू-टर्न' लोकतंत्रीकरण के अंतर्गत आते हैं, जिसका मतलब है कि वैसे देश जो प्रारंभ में लोकतांत्रिक थे, लेकिन बाद में वे निरंकुशता की ओर चले गए थे, लेकिन पुनः वे लोकतंत्रीकरण की ओर मुड़ गए। इनमें से लेसोथो, मालदीव और जाम्बिया ने 2023 तक लोकतंत्र के उस स्तर को बहाल कर दिया है, जो निरंकुशता की शुरुआत से पहले था।

इंडिया में लोकतंत्र की बदहाली

गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय, स्वीडन में वी-डेम संस्थान ने 'लोकतंत्र रिपोर्ट-2024' में बताया है कि भारत में निरंकुशता की प्रक्रिया 2008 से स्पष्ट रूप से शुरू होती है और धीमी गति से आगे बढ़ती है। पिछले कुछ वर्षों में भारत की निरंकुशीकरण प्रक्रिया को देखा गया है, जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में क्रमिक गिरावट, मीडिया की स्वतंत्रता में कमी, सोशल मीडिया पर कार्यवाही, सरकार के आलोचक पत्रकारों का उत्पीड़न, अल्पसंख्यक समुदायों पर हमला और विपक्ष को धमकी शामिल है। उदाहरण के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आलोचकों को चुप कराने के लिए राजद्रोह, मानहानि और आतंकवाद विरोधी कानूनों का व्यापक उपयोग किया है। भाजपा सरकार ने 2019 में गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) में संशोधन करके संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता के प्रति प्रतिबद्धता को कमजोर कर दिया। मोदी के नेतृत्व वाली सरकार धार्मिक अधिकारों की स्वतंत्रता को भी दबाने का कार्य किया है। राजनीतिक विरोधियों और सरकारी नीतियों का विरोध करने वाले लोगों को डराना-धमकाना, साथ ही शिक्षा जगत में असहमति के स्वर को चुप कराना सामान्य हो गया है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं का उपयोग भी विपक्षी नेताओं को डराने और सत्ता प्राप्त करने का आरोप बड़ी ही प्रमुखता से उठ रहा है, जिसके कारण भारत 2018 में चुनावी निरंकुशता में निचले पायदान पर चला गया और 2023 के अंत तक इस श्रेणी में शामिल हो जाने की बात रिपोर्ट में कही गई है।



बहरहाल, दुनिया भर में 25 देश निरंकुशता की ओर बढ़ रहे हैं, जिसका अर्थ है कि उनमें गिरावट के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। वहीं 9 देश लोकतंत्रीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। यह एक अच्छा संकेत है और इस प्रकार संभावित रूप से इनका भविष्य उज्ज्वल है। इस वर्ष 60 देशों में राष्ट्रीय चुनाव हो रहे हैं। इनमें से 31 का लोकतंत्र स्तर खराब हो रहा है, जबकि केवल 3 देशों में सुधार हो रहा है। ▪

आखिर कैसे बना पीरियड लीव

एक राजनीतिक मुद्दा

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी द्वारा महिला कर्मचारियों के लिए अनिवार्य पीरियड लीव के विचार पर अपना विरोध व्यक्त करने का मुद्दा कुछ समय पूर्व चर्चा का विषय रहा। फिल्म इंडस्ट्री की चर्चित अभिनेत्री कंगना रनौत ने भी उनकी हां में हां मिलाया था। वर्तमान में दोनों चुनाव में हैं तो ऐसे में उनके पीरियड लीव के मुद्दे पर शोध छात्रा अंजना ने समीक्षात्मक मूल्यांकन किया है।



केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी

1991 नवंबर महीने का वह दिन जब बिहार राज्य में एक अनिश्चितकालीन हड़ताल शुरू हुआ हड़ताल कर रहे सरकारी कर्मचारियों की मांग थी कि केंद्र सरकार की तर्ज पर ही राज्य में जो वेतनमान लागू किया गया है उसमें हुई विसंगतियों को दूर किया जाए इस हड़ताल में एक चार्ट आप डिमांड भी बनाया गया था जिसमें सबसे प्रमुख मांग समान वेतनलागू करने में विसंगतियों को दूर करना था इस हड़ताल में स्कूल ,यूनिवर्सिटी, टीचर्स बोर्ड कॉरपोरेशन और बिहार राज्य कर्मचारी महासंघ भी शामिल था उस दौर तक महिलाएं आंदोलन में बहुत सक्रिय होने लगी थी उस समय किसान और मजदूर अपने अधिकारों और सामंतवाद के खिलाफ आंदोलन कर ही रहे थे इसी दौरान ग्रामीण और निम्न मध्यवर्गीय महिलाएं भी शामिल होने लगी थी इन आंदोलन में महिलाओं के मुद्दों पर चर्चा होने लगी और उनके अधिकारों के लिए भी आवाज उठने लगे इसमें संविधान में मिले अधिकारों के बावजूद महिलाओं को वोट से दूर रखना, बराबर मजदूरी की मांग जैसी मुद्दे गांव देहात में महिलाएं उठाने लगी थी वहीं शहरों में युवा महिलाओं पर भी इन मुद्दों का असर होने लगा था राज्य में बुद्धिजीवी महिलाएं और कामकाजी महिलाएं उनके लिए हॉस्टल और क्रेच की सुविधा देने की मांग उठने लगी थी वहीं इस बीच का सरकारी कर्मचारियों का आंदोलन भी जोर पकड़ रहा था धीरे-धीरे इस हड़ताल में महिला कर्मचारी,शिक्षिका, नर्स और टाइपिस्ट जुडती चली गईं जब समस्याओं पर चर्चा हुई और सारी मांगों को सूचीबद्ध किया जा रहा था तभी हड़ताल में शामिल महिलाओं की तरफ से यह मांग उठी की पीरियड के दौरान छुट्टी मिलनी चाहिए उस समय बिहार राज्य के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव थे जब हमारी मांगों पर चर्चा हो रही थी उसी समय महिलाओं के मासिक धर्म के दौरान तीन दिन की छुट्टी का मुद्दा भी उठा लालू यादव ने इस मुद्दे को गम्भीरता पूर्वक लिया और 2 दिन की छुट्टी पर सहमति जताई बिहार सरकार की तरफ से राज्य की सभी नियमित महिलाओं का सरकारी कर्मचारियों को हर महीने दो दिनों की विशेष आकस्मिक अवकाश की सुविधा देने का फैसला लिया गया बिहार में महिलाओं को पीरियड के दौरान मिली यह दो दिन की छुट्टी एक बड़ा और आंदोलनकारी कदम था और शायद बिहार उस समय पहला ऐसा राज्य था जिसने सरकारी कर्मचारियों में महिलाओं के लिए इस तरह का ऐलान किया था महिलाओं को सुविधा देने वाले इस फैसले ने उनके लिए रास्ते तो खोल दिए थे लेकिन शर्म झिझक का दरवाजा खुलना अभी बाकी था प्रोफेसर भारती यस कुमार पहली महिला मानी जाती है जिन्होंने यूनिवर्सिटी के स्तर पर यह लीव या छुट्टी लेने की शुरुआत की थी उस समय वो पटना यूनिवर्सिटी में इतिहास के पीजी विभाग में प्रोफेसर थी उनका कहना है कि सरकार की तरफ से आदेश जारी हो गया था लेकिन यूनिवर्सिटी में इस अधिसूचना को नहीं लगाया गया था और वह कहीं फाइल में बस पड़ा हुआ था ।

जो हड़ताल हुई थी उसमें पटना यूनिवर्सिटी टीचर्स एसोसिएशन(पी यू टी ए) और फेडरेशन ऑफ यूनिवर्सिटी सर्विस टीचर्स एसोसिएशन ऑफ़ बिहार(एफ यू एस टी ए बी) भी शामिल हुआ था हम लोगों ने संगठन से भी पूछा कि इस बात पर सहमति बनी है की छुट्टी भी दी जाएगी तो उन्होंने भी कहा कि यह फैसला लिया जा चुका है और आदेश भी जारी



मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव थे जब हमारी मांगों पर चर्चा हो रही थी उसी समय महिलाओं के मासिक धर्म के दौरान तीन दिन की छुट्टी का मुद्दा भी उठा लालू यादव ने इस मुद्दे को गम्भीरता पूर्वक लिया और 2 दिन की छुट्टी पर सहमति जताई बिहार सरकार की तरफ से राज्य की सभी नियमित महिलाओं का सरकारी कर्मचारियों को हर महीने दो दिनों की विशेष आकस्मिक अवकाश की सुविधा देने का फैसला लिया गया बिहार में महिलाओं को पीरियड के दौरान मिली यह दो दिन की छुट्टी एक बड़ा और आंदोलनकारी कदम था

किया जा चुका है लेकिन वह बात यूनिवर्सिटी में सर्कुलेट होकर हम तक नहीं पहुंच सकी थी हम इस लीव को लेकर चर्चा करते थे लेकिन महिला शिक्षिकाएं इसे लेने में झिझक रही थी प्रोफेसर भारती बताती है कि मैंने यह ठान लिया था कि मैं अपने पीरियड के लिए छुट्टी लूंगी मैंने कहा कि मैं इसकी शुरुआत करूंगी जब मेरे पीरियड का समय आया तो मैंने इस बारे में छुट्टी लिखी और मेरे विभाग के हेड को दी उन्होंने पहले मेरी चिट्ठी को देखा और फिर मुझे, मैंने चिट्ठी तो दे दी लेकिन मेरे पांव कांप रहे थे और मुझे बहुत झिझक भी हो रही थी क्योंकि हमने तो बचपन से कभी पीरियड के बारे में खुलकर किसी से बात ही नहीं की थी और ना कोई करता था जब उन्होंने उस चिट्ठी को साइन करके कलर्क को बढ़ाया उनके चेहरे पर तंज वाली मुस्कुराहट आई जैसे यह कहना चाहते हो कि अच्छा अब तुम लोगों को इसके लिए भी छुट्टी चाहिए इसके बाद मैंने टीचर्स लेडीज क्लब में जाकर बताया कि हम जीत गए तो उन्होंने पूछा कि क्या मतलब तो मैंने कहा कि छुट्टी मिल गई तो उन्होंने कहा कि आपको मिल गई तो हम भी अप्लाई कर सकेंगे वह बताती है की छुट्टी तो मिल गई थी और यह हमारा हक भी था लेकिन इस छुट्टी के लिए आवेदन देने में महिलाओं को झिझक थी और उस टैबू को तोड़कर निकलने में वक्त लगा लेकिन महिलाएं धीरे-धीरे आगे आई और छुट्टी लेने लगी ..

अरुणाचल प्रदेश से आने वाली सांसद निनांक एरिंग ने एक प्राइवेट मेंबर बिल मांस ड्यूरेशन बेनिफिट 2017 के लोकसभा में पेश किया था इस बिल में सरकारी और निजी क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान 2 दिन की छुट्टी देने का प्रस्ताव दिया गया साथ ही यह पूछा गया था कि सरकार क्या ऐसी किसी योजना पर विचार कर रही है इस पर महिला और विकास मंत्रालय ने कहा था कि ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं है यहां यह सवाल उठता है कि क्या अपने स्तर पर राज्य सरकारें इस तरह का कदम नहीं उठा सकती हैं अभी हाल ही में बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी का बयान आया है कि पीरियड लीव की क्या जरूरत है महिलाओं पर कई बार समानता का भी सवाल उठता है कि महिला और पुरुष बराबर है तो यह छुट्टी क्यों लेकिन इस तथ्य को कोई ना नहीं कर सकता कि महिला और पुरुष का शरीर अलग है उसे पीरियड होते हैं और वह मां बन सकती है जो पुरुष का शरीर नहीं कर सकता ऐसे में यह तर्क ही बेमानी हो जाता है। ▪

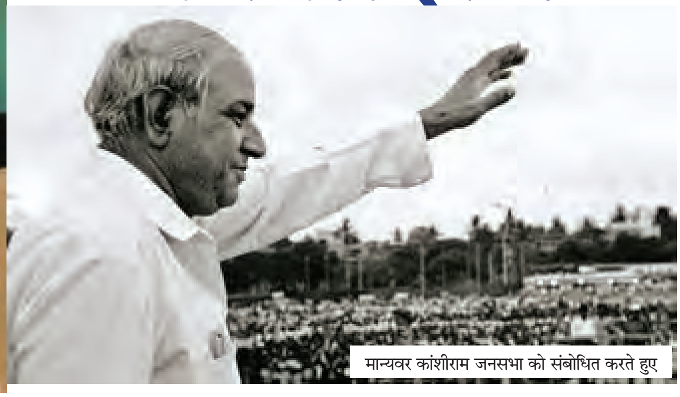


रंजना



मान्यवर कांशीराम

गुलामी तोड़ने का नाम "कांशीराम"



मान्यवर कांशीराम जनसभा को संबोधित करते हुए

देश में आम चुनाव चल रहे हो और मान्यवर कांशीराम को याद न किया जाय तो बात अधूरी रह जाती है। राष्ट्रीय पार्टी बसपा के संस्थापक मान्यवर कांशी राम जी का जन्मदिवस भी पिछले दिनों था, इलाहबाद विश्वविध्यालय के प्रो डॉ विक्रम जी मान्यवर कांशीराम जी के बारे में बसावन इंडिया को अपने विचार भेंजे है।

तमाम लेखकों और कलमकारों ने कांशीराम को केवल दलितों तक सीमित करने का प्रयास किया है जैसे कि अंबेडकर साहब को दलितों के मसीहा के रूप में सीमित करने का प्रयास किया गया। यही षड्यंत्र है इसी को एंटोनियो ग्राम्सी के शब्दों में हेजेमनी या ब्रहामंवादी हेजेमनी कहेंगे, इसी ब्रहामंवादी हेजेमनी को तोड़ने का नाम कांशीरामवाद है। एस बोऊलस और एस गेंटीस ने हिडेन कैरिकुलम का सिद्धांत दिया था जिसका अर्थ है स्कूल, कालेज, विश्वविध्यालय, राजनीतिक पार्टियों इत्यादि में एक एक फार्मल कैरिकुलम होता है जिसमे सब अच्छा-अच्छा पढाया जाता है जबकि उसी के अंदर एक छुपा हुआ पाठ्यक्रम होता है जिसको लड़ा जाता है दरअसल ए राजनीतिक पार्टियों एंव शिक्षण संस्थाएं जातिवाद, पित्रसत्तावाद, धार्मिक रूढ़ीवाद भेदभाव को संस्कृतिवाद हेजेमनी के माध्यम से हम पर लाद कर हमें मानसिक गुलाम बनाती हैं। हम मानसिक गुलाम हुए हैं और हमको पता ही नहीं चलता। इसी हुए को समाप्त करने का नाम कांशीरामवाद है इसका इलाज उनकी पुस्तक 'चमचा युग' में किया गया है जिसमे वे पहले ब्राम्हणवादी हेजेमनी और छुपे हए पाठ्यक्रम दोनों को समझाते हैं। ब्राम्हणवादी हेजेमनी हमारे साईकोलोजी अर्थात हमारे दिलोदिमाग में आ कर बैठ गई है जैसे माँ के पेट से लेकर मरने तक 'ब्रहामनी कर्मकांड ब्रहमाणी देवता ब्राहमण भाग्यविधाता में ब्राहमण समाज को छोड़कर सबको लपेटा गया । सभी जातियों को एक देवता देकर उनको फंसाया गया। यादवों को कृष्ण, क्षत्रियों को राम, बनियों को लक्ष्मी और शूद्रों को अलग अलग देवता देकर । अब बूढ़े बुजुर्ग से लेकर जवान तक इसमें फस गए । दूसरा सभी को त्यौहार देकर इसमें फसाया गया। होली, दीवाली, छठ, मंदिर, तीज ज्युतिया इत्यादि देकर इसमें फंसाया गया। तीसरा सभी को इतिहास अर्थात उच्च जातियों का इतिहास देकर इसमें फंसाया गया जैसे उच्च जातियों जो रूलिंग क्लास रही हैं उनका ही हमें पढ़ने को बताया गया। प्राचीन काल का मतलब केवल वैदिक साहित्य, मौर्य वंश, हर्यक वंश, पाल वंश, राजपूत काल, मध्यकाल में भी केवल मुस्लिम शासको में खान-पठान, सैय्यद और तथाकथित आधुनिक काल में गाँधी, सुभाष, कांग्रेस और जनसंघ जैसे उच्च जातियों के इर्द गिर्द ही इतिहास नाचता रहा है। चौथा राजनीतिक नेतृत्व भी इनके ही इर्द गिर्द नाचता रहा। कहा गया कि इन जातियों को नेतृत्व आता ही नहीं अथवा वे केवल सेवा करने वाली जातियां ही रही हैं। इसी को ब्राहमणवादी हेजेमनी कहेंगे।

इसी को कांशीराम ने तोड़ने की कोशिश की। इसी को छुपा हुआ पाठ्यक्रम भी कहेंगे कि विभिन्न षडयंत्रों के माध्यम से यह हमारे दिमाग को गुलाम बना लिया हैं इसी गुलामी को तोड़ने का नाम कांशीरामवाद है। 'चमचा युग' में गुलामी को चित्रित किया गया है बहुजन नायकों का मेला लगाया गया जैसे गौतम बुद्ध, कबीर, गुरु रविदास, गुरु घासीदास, संत तुकाराम, संत चोखामोला, संत दादू, संत नामदेव, संत गाडगे, गुरु नानक देव, स्वामी अछूत आनंद, बिरसा मुंडा, ज्योतिबा राव फुले, छत्रपति शाहूजी, महाराज नारायण, गुरु ईवी, रामास्वामी पेरियार, पेरियार ललई यादव, रामस्वरूप वर्मा, बाबू जगदेव, प्रसाद कुशवाहा इत्यादि द्वारा सामाजिक परिवर्तन का अभियान चलाया गया

राजनीतिक सत्ता हासिल करने के लिए बहुजन समाज पार्टी बनाई गई। राजनीतिक चेतना लाने के लिए डी एस 4 बनाया गया। पत्रकारिता में बेचारी क्रांति के लिए कई पार्टी आधारित इंडियन बहुजन संख्या इत्यादि पत्रकारिता की शुरुआत की गई महापुरुषों के नाम पर जिले बनाए गए महापुरुषों के नाम पर विश्वविद्यालय बनाए गए महापुरुषों के स्थलों को चिन्हित किया गया नई-नई गढ़े गए इन्हीं सभी तरीकों को काशीराम बात कहेंगे और इसी को काशीराम व्यवस्था भी कहेंगे। ▪



प्रोफेसर विक्रम
इलाहबाद विश्वविद्यालय

दिल के मरीजों के लिए धरने पर डॉ. ओमशंकर

बीएचयू अस्पताल में हृदय रोगियों को आवंटित बेड पर भर्ती करने, एमएस को हटाए जाने की मांग को लेकर हृदय रोग विभागाध्यक्ष प्रो. ओम शंकर अनशन पर बैठे हुए हैं। भोजन त्याग कर वह केवल जल ग्रहण कर रहे हैं। डॉ ओम शंकर को बुद्धिजीवियों और समाजसेवियों का जमकर समर्थन मिल रहा है।



धरने पर डॉ. ओमशंकर

डॉ ओम शंकर मंडल की मांग है

अस्पताल के हृदय रोग विभाग स्थित अपने कक्ष में जमीन पर बैठकर अनशन करने वाले प्रो.ओम शंकर का कहना है कि पिछले दो साल से सुपरस्पेशियलिटी ब्लॉक में आवंटित 41 बेड पर मरीजों को भर्ती नहीं किया जा रहा है। इसकी वजह अस्पताल प्रशासन द्वारा डिजिटल लॉक लगवाया जाना है। कई बार आवाज उठाने के बाद जब कोई कार्रवाई नहीं हुई तो मरीजों के हित के लिए अनशन पर बैठना पड़ा। डिजिटल लाक के चलते पिछले डेढ़ वर्षों में लगभग 21000 मरीजों को बिना इलाज के वापस लौटना पड़ा, जिसमे से सैकड़ों की मौत हो गई तो कुछ निजी अस्पतालों में इलाज करा कर कंगाली में पहुच गए हैं।

कौन हैं डॉ ओम शंकर

डॉ ओम शंकर की गणना देश के प्रसिद्ध कार्डियोलोजिस्ट में होती है। डॉ ओम शंकर एक नेक दिल इन्सान के साथ साथ सामाजिक चिंतक /कार्यकर्त्ता भी हैं । विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर खुल कर अपनी बेबाक राय रखते हैं। वे मरीजों के हक़ की लड़ाई स्वंय लड़ते रहते हैं । इसके आलावा के विभिन्न सामाजिक मंचों पर देखे जा सकते हैं

चर्चा में रहे हैं

बी एच यू में सफलता पूर्वक स्टंट पहली बार स्टंट लगाने का श्रेय डॉ ओम शंकर को है डॉ ओम शंकर बीएचयू अस्पताल में मरीजो के लिए बेहतर इंतजाम और बनारस में एआईएमएस की स्थापना के लिए पहले भी अनशन पर रहे हैं।

कोरोना वैक्सीन के निगेटिव प्रभाव का भंडाफोड़ से पहले डॉ ओम शंकर ने अपने एक इंटरव्युव में इसे असुरक्षित बताया था, उनका कहना था कि कोरोना वैक्सीन बहुत जल्द बाजी में निर्मित की गई है इसके नकारात्मक प्रभाव होंगे| ▪

बसावन इंडिया को सर्वश्रेष्ठ पत्रिका का सम्मान



बसावन इंडिया पत्रिका के संपादक नरेन्द्र प्रताप ब्लॉक प्रमुख उषा सेन से सर्वश्रेष्ठ पत्रिका का सम्मान लेते हुए

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका बसावन इंडिया को डॉ भीम राव अंबेडकर जन्मदिवस समारोह में सर्वश्रेष्ठ पत्रिका का सम्मान दिया गया। बसावन इंडिया पत्रिका को पत्रकारिता क्षेत्र में उत्कृष्ट व निष्पक्ष लेखन के लिये अखंड भारत मिशन द्वारा दिया गया । 21 अप्रैल 2024 को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के समधानपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकत्री और ब्लाक प्रमुख उषा सेन द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया गया| ▪

जूनियर पिकासो



रवि कुमार (धाकड़)

हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, कमी है तो अवसरों । प्रतिभाओं को निखारने के लिए आवश्यकता है अवसर प्रदान करने की। अपने पूर्व के संकल्प के अनुसार बसावन इंडिया अपनी अवसर देने की कोशिश में इस बार के अंक में चित्रों के एक संकलन को प्रस्तुत कर रही है जिसे जौनपुर जिले से रवि कुमार (धाकड़) ने बना कर भेजा है। रवि कुमार (धाकड़) जीआईसी इलाहाबाद के छात्र है। उन्हें पेंटिंग बनाने का शौक है। वे 12 साल की उम्र से पेंटिंग कर रहे हैं। उन्होंने पहली पेंटिंग अपनी दादी की बनाई थी। रवि कुमार (धाकड़) ने अभी तक किसी भी संस्था से प्रशिक्षण नहीं लिया है। पेंटिंग के अलावा उनकी रुचि वीडियो एडिटिंग में है। वे कम बोलना और ज्यादा सुनना पसंद करते हैं। उन्हें खाली समय में सोना पसंद है। ▪



चुनिंदा चित्रों का संग्रह





रवि कुमार (धाकड़) की पहली पेंटिंग











सदस्यता रसीद

पत्राचार का पता : देशराज एडवोकेट, 12बी/284, वृंदावन योजना, रायबरेली रोड, लखनऊ (उ.प्र.) प्रतिशत मो.: 9415767238

मैं बसावन इंडिया राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के लिए सदस्यता ले रहा / रही हूं।

श्री / श्रीमती : ....

पता पिन कोड सहित : ....

मोबाईल नं. : .... ईमेल आईडी : ....

नगद राशि शब्दों में : ....

PhonePe
ACCEPTED HERE

☐ वार्षिक ₹ 500/- ☐ 2 वर्ष ₹ 1000/- ☐ 5 वर्ष ₹ 2500/-

☐ 10 वर्ष ₹ 5000/- ☐ आजीवन ₹ 10, 000/-

Bank Name	:	State Bank of India Main Branch, Azamgarh (U.P.)
AC Holder Name	:	Basavan India
AC No.	:	40640205456
IFSC Code	:	SBIN0000014

प्राप्तकर्ता का नाम हस्ताक्षर

Rate Card

Ad On Page	Rate	Colour/BW	Print Area
Full Page Front Inside	40,000/-	Colour	19 cm x 26cm
Full Page Back Cover	40,000/-	Colour	19 cm x 26cm
Full Page Back In Side	30,000/-	Colour	19 cm x 26cm
Half Page	20,000/-	Colour	19 cm x 26cm
Half Page	10,000/-	B/W	19 cm x 13cm
Quarter Page	10,000/-	Colour	123.5 Sqm
Quarter Page	5,000/-	B/W	123.5 Sqm
1/8 Page	5,000/-	Colour	61.75 Sqm
1/8 Page	3,000/-	B/W	61.75 Sqm

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : +91 9415767238, +91 9453171770

बसावन नामा

आपके सामने प्रस्तुत है हमारे पिछले अंकों के बारे में हमारे सुधि पाठकों की प्रतिक्रिया जो कि हमारे पास विभिन्न माध्यमों से भेजी गई है।

मुझे इस बात की ख़ुशी है कि सामाजिक मुद्दों को लेकर इस तरह की पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है, पत्रिका पर बाबा साहब और ज्योतिबा फूले के विचारों की स्पष्ट छाप दिखाई दे रही है। मैगजीन बहुत दृढ़ता के साथ सामाजिक मुद्दों को उठा रही है, आपकी पत्रिका के माध्यम से वे जानकारियां मिलती है जो में स्ट्रीम मीडिया नहीं उठती है। प्रोफेसर विक्रम, जो सामाजिक मुद्दों को लेकर सदैव एक्टिव रहते हैं, के साथ हो रहे वर्तावों के बारे में इसी पत्रिका से जानकारी मिली। पत्रिका को हम लोगों का तन-मन-धन से सहयोग मिलता रहेगा।

ए के सुमन, पूर्णिया बिहार

बसावन इंडिया तेजी से बढ़ रही सामाजिक और राजनैतिक मुद्दों एक बेहतरीन पत्रिका है, शाम को पत्रिका प्राप्त हुई, रात्रि में 11 बजे से सुबह 4 बजे तक लगातार पत्रिका को पढ़ गया, इस दौरान मैंने पाया कि पत्रिका के एक-एक कोने का इस्तेमाल बहुत सावधानी पूर्वक किया गया है। पत्रिका में छपा उषा सेन का लेख 'मूर्तियों के बहाने, मुझे बहुत गहराई से प्रभावित किया। पत्रिका में प्रूफ सम्बन्धी कमियां हैं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है।

मनीष कुमार, वाराणसी

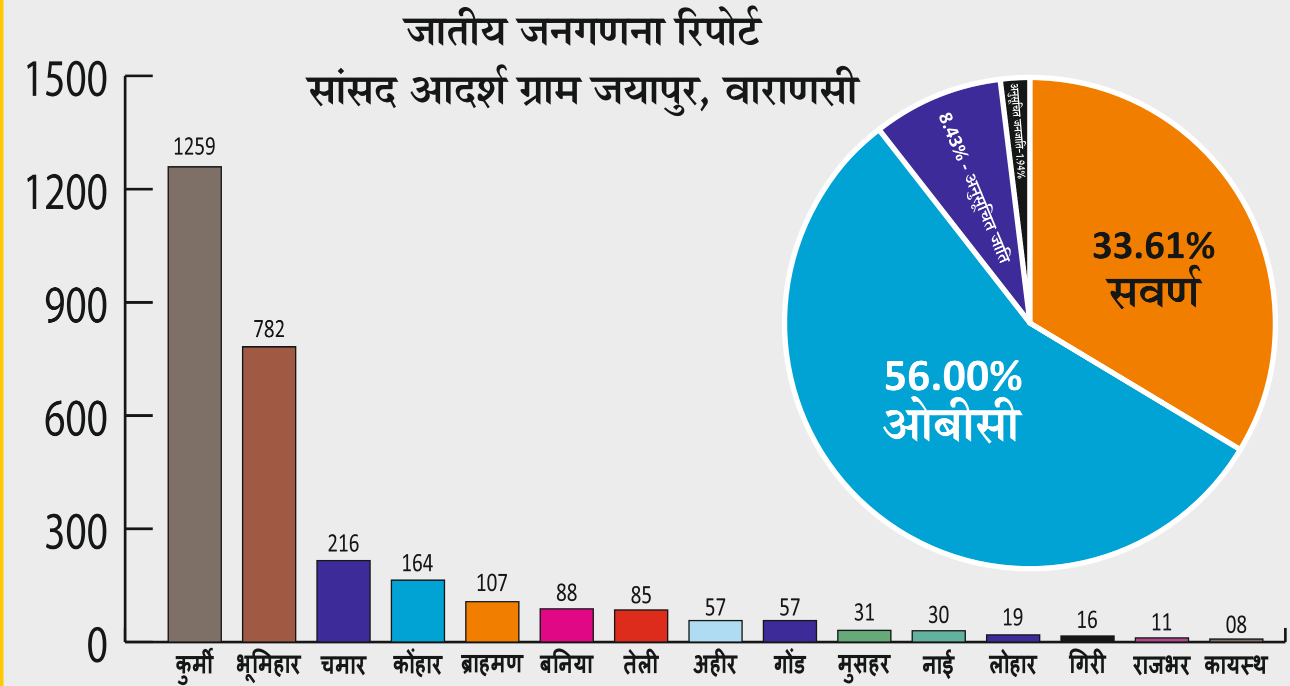
बसावन इंडिया ने समाज में पठान पठान की सामग्रियों की हो रही कमी के विकल्प के रूप में उभरी है। पत्रिका में छपे लेख बहुत ही उम्दा क्वालिटी के है, पत्रिका समाज में एक बौद्धिक विमर्श के लिए स्थान उपलब्ध करवाती है। मैंने पत्रिका के बारे में जानना चाहा तो पता चला कि पत्रिका बहुत ही सीमित संसाधनों में अपनी गुणवत्ता बनाये हुए है।

विवेक कुमार

नोएडा, उ.प्र.

मैगजीन प्राप्ति के लिए संपर्क करें

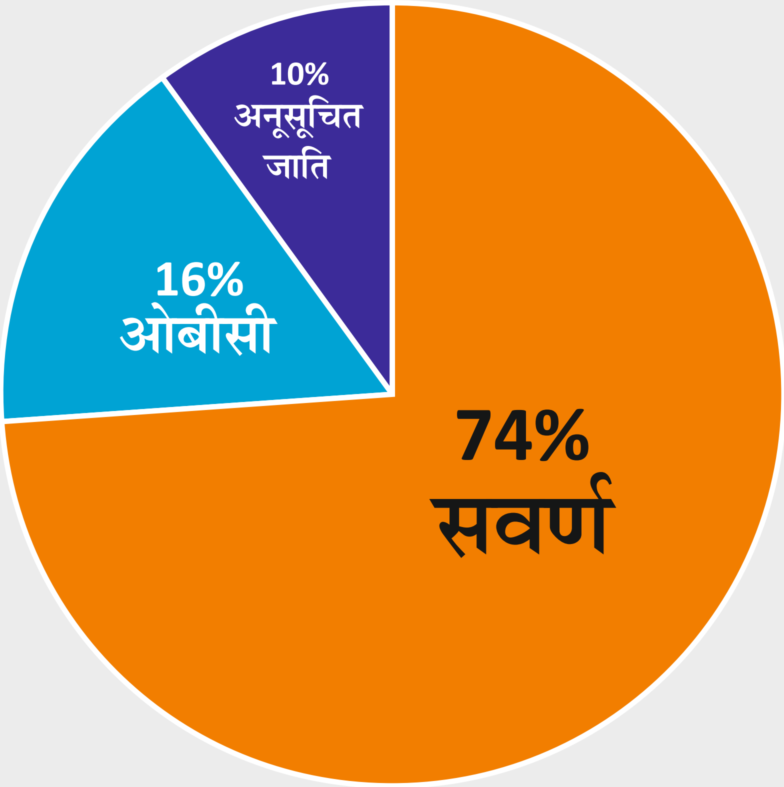
एडवोकेट देशराज (लखनऊ) 9415767238
परिभाषा (दिल्ली एनसीआर)
8826063330
तेजबहादुर (भोपाल)
9406955327
कृष्णा पैकरा (अम्बिकापुर)
8839884273
संजीत बर्मन (बिलासपुर)
9754737875
कोमल प्रसाद (कुशीनगर)
9565869539
राम सिंह यादव (आजमगढ़)
9415085600, 9454479600
अनिल दीप चौधरी (जौनपुर)
9554687948
प्रमोद कुमार (जौनपुर/खुटहन)
9506473500
प्रदीप चौहान (जौनपुर/सदर)
7985658300
प्रवीन कुमार (गाजीपुर)
9415888054
संजय कुमार (चंदौली)
9415978381
मनोज कुमार (सोनभद्र)
9005800506
विनय कुमार (बलिया)
9415659396
उमेश प्रसाद यादव (पुर्णिया बिहार)
9709514029
जवाहर लाल राय (मुजफ्फरनगर बिहार)
7903148751
अरविंद कुमार गदर (प्रयागराज झूसी)
7651961448
आशीष यादव (गौरी गंज अमेठी)
9648550222
बृजेंद्र बहादुर यादव (फूलपुर आजमगढ़)
7309814736
प्रयागराज में लक्ष्मी चौराहे पर हीना पुस्तक केंद्र पर भी उपलब्ध है।



ग्राफ एवं पाई चार्ट के विस्तृत विवरण के लिए पृष्ठ 23 पढ़ें।



बसावन इंडिया राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका का संचालन सहकारिता के आधार पर किया जा रहा है। पत्रिका को आकर्षक और गुणवत्तापूर्ण बनाने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। संपादक मंडल की हर संभव कोशिश है कि खबरों को निष्पक्ष और तथ्यपूर्ण तरीके से पाठकों तक पहुंचाया जाए। यदि फिर भी कहीं कोई कमी रह जाती है तो हम अपने सम्मानित पाठकों से आशा करते हैं कि वे हमारा ध्यानकर्षण करेंगे। साथ ही साथ हम आपके लेख और विचारों का basavanindi@gmail.com पर स्वागत करते है। बसावन इंडिया की कोशिश होगी कि वह आपके लेख और विचार संपादन के बाद प्रकाशित करें। यदि जगह के अभाव और मुद्दों के प्राथमिकता में आपके विचार और लेख छूट जाते हैं तो उसे अगले अंक में लेनें की हमारी पूरी कोशिश रहेगी। आपकी प्रतिक्रिया का हमें इंतजार रहेगा।



- रिटर्निंग आफिसर : यादव-मुस्लिम क्यों नहीं?
- 15% आबादी के 74% अधिकारी हैं, शेष 85% आबादी से 26% अधिकारी

पाई चार्ट के विस्तृत विवरण के लिए पृष्ठ 22 पढ़े।

